बाइबल की मुख्य शिक्षाएं

लेखक

सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो सन्देशमाला

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया
बॉक्स 3815
नई दिल्ली - 110049

Important Teachings Of Bible

मुद्रक : प्रिंट इन्डिया, A-38/2 द्वितीय चरण, मायापुरी,
नई दिल्ली - ११००६४

विषय सूची

1.	केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है	6
2.	वस्तुएं जो केवल एक-एक हैं	12
3.	उद्धार केवल मसीह में है	18
4.	उद्धार परमेश्वर का एक दान है	23
5.	उद्धार पाने के लिये सुसमाचार का पालन करना आवश्यक है	29
6.	सब का उद्धार नहीं होगा	35
7.	स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है	40
8.	स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है	45
9.	नरक उतना ही वास्तविक है जितना कि स्वर्ग है	50
10.	मृत्यु के बाद न्याय निश्चित है	56
11.	दोबारा अवसर नहीं मिलेगा	62
12.	बाइबल परमेश्वर का वचन है	68

सूचना

आप रेडियो पर प्रभु यीशु का सुसमाचार सुन सकते हैं। हर एक मंगलवार, बृहस्पतिवार, और शुक्रवार को रात में 9 बजे और हर एक रविवार को दिन में 12:45 पर ये कार्यक्रम रेडियो श्री लंका से 25, 41, और 31 मीटर बैंड पर सुने जा सकते हैं।

एक और आवश्यक सूचना !

आप हमारे यहां से कुल पन्द्रह रुपए भेजकर सुसमाचार प्रवचनों की बीस पुस्तकें मंगवा सकते हैं; इनके द्वारा प्रचार किया जा सकता है और इन्हें लोगों को पढ़ने के लिये भी दिया जा सकता है। इन किताबों को अन्य लोगों तक पहुंचाकर आप मसीह के सुसमाचार को उन तक पहुंचा सकते हैं।

पता :

बाइबल टीचर

बॉक्स 3815

नई दिल्ली -110049

परिचय

बाइबल हमें कुछ महान तथा विशेष विषयों के बारे में बताती है। जैसे कि परमेश्वर और उसका अनुग्रह, उद्धार, यीशु का सुसमाचार नया-जन्म, स्वर्ग और नरक मृत्यु तथा उसके पश्चात् न्याय।

कई बार वे लोग भी जो यीशु में विश्वास करते हैं यह जानकर बड़े ही चकित होते हैं कि जिस बात में वे विश्वास करते हैं वह बात बाइबल में कहीं भी नहीं सिखाई गई है। आप शायद सोचें कि यह कैसे हुआ ? यह केवल इसीलिये हुआ क्योंकि ये लोग शुरु से ही उन शिक्षाओं में बड़े हुए और उन्होंने कभी भी स्वयं बाइबल का अध्ययन करने की कोशिश नहीं की। दुख की बात यह है कि सच्चाई को जानने के बाद भी ये लोग अपनी गलती में ही रहना उचित समझते हैं।

प्रस्तुत पाठ इसीलिये लिखे गए हैं ताकि हम जानें कि बाइबल इन बड़े विषयों के बारे में क्या शिक्षा देती है। इसमें कोई शक नहीं कि सच्चाई एक दवाई की तरह काम करती है उनके लिये जिनको इसकी आवश्यकता होती है, यदि वे इसका उपयोग करें।

हमारी यह प्रार्थना है कि आप सच्चाई को जानकर उसको स्वीकार करेंगे।

इन पाठों को भाई सनी डेविड ने तैयार किया है ताकि इन्हें रेडियो के माध्यम से सारे भारतवर्ष में सुना जा सके। अब इन पाठों को एक पुस्तक का रूप दिया गया है ताकि कि आप इन्हें मंगवाकर अपने ही घर में बाइबल का अध्ययन कर सकें। हमारी आशा है कि आप को इस पुस्तक से अवश्य ही लाभ होगा।

जे॰ सी॰ चोट

केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है

जिस प्रकार शारीरिक रुप से ज़िन्दा रहन के लिये हमें भोजन की आवश्यकता है, ठीक वैसे ही आत्मिक रुप से ज़िन्दा रहने के लिये भी हमें परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है। प्रभु यीशु ने एक बार परमेश्वर के वचन की तुलना भोजन के साथ करके यूं कहा था, "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" (मत्ती ४:४)। यहां प्रभु यीशु के कहने का अर्थ वास्तव में यह है कि शारीरिक रुप से ज़िन्दा रहने के लिये मनुष्य को रोटी की आवश्यकता है, लेकिन तौभी रोटी उसे हमेशा तक ज़िन्दा नहीं रख सकती है। परन्तु परमेश्वर का वचन ऐसा भोजन है जिसके द्वारा मनुष्य हमेशा तक ज़िन्दा रहेगा। इस बात को ध्यान में रखकर आज हमारे जीवनों में परमेश्वर के वचन का एक बड़ा विशाल महत्व होना चाहिए; हमें उसके वचन को सुनने के लिये उन्मादित रहना चाहिए और उसे मानने के लिये सदा तैयार रहना चाहिए। परमेश्वर के वचन के लिये यीशु ने जो कहा था वास्तव में वह सच है। क्योंकि परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि जगत में सब लोग पाप के वश में हैं, और इसलिये वे सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, उस से अलग हैं और इस कारण आत्मिक दृष्टिकोण से वे सब मरे हुए हैं। (रोमियों ३:२३; यशायाह ५९:१,२)। स्वयं मनुष्य भी इस बात को जानता है, और इस कारण वह अपनी कल्पना से परमेश्वर की भक्ति और उपासना करके उसे प्रसन्न करना चाहता है। शताब्दियों से मनुष्य ने अपनी कल्पना से अनेक ईश्वरों और भगवानों को अपने लिये रच लिया है। मनुष्य ने अपनी कल्पना के उन भगवानों को अनेक मूर्तियों का रुप भी दिया है, और उन मूर्तियों को वह पूजता है; उन्हें फूलों की मालाएं पहिनाता है ; उनके आगे फलो

और मेवों इत्यादि की भेंट चढ़ाता है। वह उनके सामने झुककर उन्हें दन्डवत करता है, और उनकी प्रशंसा में गा-बजाकर उनकी स्तुति और बड़ाई करता है। और यह सब कुछ मनुष्य इसलिये करता है ताकि परमेश्वर उस से प्रसन्न हो जाए और उसके पापों को क्षमा कर दे। ताकि उसका मेल परमेश्वर के साथ हो जाए और वह नरक में जाने से बच जाए।

परन्तु सच्चा तथा जीवता परमेश्वर अपने पवित्र वचन की पुस्तक बाइबल में आज्ञा देकर कहता है, कि "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दन्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना।" (निर्गमन 20:३-५)। और जो लोग ऐसा करते हैं उन से परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक में यूं कहता है, कि "जो मूरत खोदकर बनाते हैं, वे सब के सब व्यर्थ हैं, और जिन वस्तुओं में वे आनन्द ढूंढ़ते हैं उन से कुछ लाभ न होगा; उनके साक्षी, न तो आप कुछ देखते, और न कुछ जानते हैं, इसलिये उनको लज्जित होना पड़ेगा।" (यशायाह ४४:९) । एक अन्य स्थान पर परमेश्वर की पुस्तक का लेखक लिखकर यूं कहता है, "हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उसने जो चाहा वही किया है। उन लोगों की मूर्तें सोने चांदी ही की तो हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं। उनके मुंह तो रहता है, परन्तु वे बोल नहीं सकतीं; उनके आँखे तो रहती हैं, परन्तु वे देख नहीं सकती। उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकतीं; उन के नाक तो रहती है, परन्तु वे सूंघ नहीं सकती उनके हाथ तो रहते है, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकतीं; उन के पांव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकती; और अपने कन्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं। जैसी वे हैं वैसे ही उन के बनानेवाले हैं; और उन पर सब भरोसा रखने वाले भी वैसे ही हो जाएँगे।" (भजन संहिता ११५:३-८)। और फिर बाइबल में हमें यह एक बड़ी ही गम्भीर चेतावनी मिलती है। लिखा है:

"परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रगट है, क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उन के मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की न कि उस सृजन हार की जो सदा धन्य है।" (रोमियों १:१८-२५)।

मित्रो, आज मैं आपके सामने यह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न रख रहा हूं, कि आज आप किस ईश्वर या परमेश्वर को मान रहे हैं? क्या आप का परमेश्वर कोई निर्जीव वस्तु है, या क्या आप उस परमेश्वर कि इच्छा पर चल रहे हैं जो सच्चा और ज़िन्दा है; जो स्वर्ग और पृथ्वी का और जो कुछ भी उन में है उन सबका बनानेवाला है? क्या आप का परमेश्वर किसी मनुष्य की कल्पना का परमेश्वर है, या क्या आप उस महान परमेश्वर से परिचित हैं जो आज भी अपने लिखे हुए वचन के द्वारा प्रत्येक मनुष्य के साथ बातें करता है? सुनिये, कि प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में लिखकर क्या कहता है ; वह कहता है, कि, "हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर

कहलाते हैं, (जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)। तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिये हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं।" (१ कुरिन्थियों ८: ४-६) क्या आप ने सुना ? परमेश्वर की प्रेरणा से लिखनेवाला कहता है कि हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है। मित्रो, आप चाहे किसी भी भाषा के बोलनेवाले हों ; चाहे किसी भी जाति या कुल के हों, परन्तु जो परमेश्वर आप का है वही मेरा भी परमेश्वर है– और हम सब का केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है। वह कोई मरा हुआ निर्जीव परमेश्वर नहीं है, परन्तु वह एक ज़िन्दा और कार्यशील परमेश्वर है। वह केवल एक शक्ति ही नहीं है परन्तु वह हम सब का एक प्रेमी पिता है। वह परमेश्वर आज अपने वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल के द्वारा हम से बातें करता है। न केवल वह अपने वचन की पुस्तक में हमें यही बताता है कि हम सब पाप के कारण उससे अलग है और अपने पापों के कारण हमेशा के लिये नाश हो जाएंगे। परन्तु अपनी पुस्तक में उसने हमें एक छुटकारे का मार्ग भी दिखाया है। वह हम से प्रेम करता है और पाप से हम सब का उद्धार करना चाहता है। वह चाहता है कि हम सब पाप से मुक्ति प्राप्त करके धर्मी बन जाएं और इस जीवन के बाद उसके स्वर्ग में प्रवेश करके हमेशा तक उसके साथ रहें। सो वह हम सब से कहता है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के ऊपर विश्वास लाएं। क्योंकि परमेश्वर ने हम सब के पापों के छुटकारे के दाम में उसे मरने के लिये दे दिया था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर के अनुग्रह से यीशु ने जगत में प्रत्येक मनुष्य के पाप के कारण मृत्यु का स्वाद चखा था। (इब्रानियों २:८)। वह परमेश्वर की इच्छा से मनुष्यों के हाथों से मरने के लिये क्रूस पर चढ़ाया गया, क्योंकि उसे परमेश्वर ने जगत के सारे लोगों के पापों का प्रायश्चित ठहराया, अर्थात् यीशु प्रत्येक मनुष्य के बदले में, उसके पापों के कारण परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर मारा गया था। (रोमियों ५:८;१ यूहना 2:2)। इसलिये बाइबल

हम से कहती है "कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो।" क्योंकि, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बना जाएं।" (2 कुरिन्थियों ५:२०, २१)। यीशु परमेश्वर का सामर्थी वचन था। वह पृथ्वी पर मनुष्य की देह लेकर केवल इसीलिये आया था कि उसके बलिदान के कारण मनुष्य को अपने पापों से उद्धार पाने का मार्ग मिल जाए। उसकी मृत्यु के तीन दिन के बाद परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से उसे फिर जिला उठाया, और इसके बाद वह स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया। क्या आप यीशु पर विश्वास करते हैं? क्या आप अपने सारे मन से इस बात पर विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मेरे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था ? यदि आप ऐसा करते हैं, तो बाइबल का परमेश्वर आप को यह आज्ञा देता है कि आप अपना मन फिराएं अर्थात् पाप और अज्ञानता की उन सब बातों को छोड़ दें जिनसे सच्चे परमेश्वर की बड़ाई नहीं होती। और फिर हमारे परमेश्वर की यह आज्ञा है कि जो लोग ऐसा करते हैं वे उसके नाम से बपतिस्मा लें अर्थात् पानी के भीतर दफ़न होकर अपने पुराने मनुष्यत्व को गाड़ दें।
(मत्ती २८:१९; मरकुस १६:१६; लूका १३:३; रोमियों ६:३-६; १ पतरस ३:२१)।

यदि आप इस प्रकार परमेश्वर की आज्ञा को मानेंगे, तो बाइबल में लिखा है कि आप एक नए मनुष्य बन जाएंगे (२ कुरिन्थियों ५:१७), क्योंकि परमेश्वर अपने पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के कारण आप के सब पापों को क्षमा कर देगा, और यीशु में होकर आप परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएंगे (गलतियों ३:२७; २ कुरिन्थियों ५:२२)। फिर इस नए जीवन में आप न तो अपने मन की अनर्थ रीति पर चलेंगे और न अपने मन की कल्पना से परमेश्वर को मानेंगे। परन्तु आप परमेश्वर के वचन के प्रकाश में चलेंगे।

क्या आप उस एकमात्र सच्चे परमेश्वर के ऊपर विश्वास करते हैं जो बाइबल के द्वारा आज हम सब से बातें करता है? क्या आप उसके पुत्र यीशु में विश्वास करते हैं जो हम सब के पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था ? क्या आप उसके पथ पर चलने को तैयार हैं ? केवल वही एक सच्चा परमेश्वर है, और केवल वही हम सब का उद्धार कर सकता है; और केवल उसी के न्यायासन के सामने एक दिन हम सब को खड़ा होना पड़ेगा। यदि आज आप उसमें विश्वास नहीं करते तो उस दिन उसमें आप अवश्य विश्वास करेंगे। (२ कुरिन्थियों ५:१०) परन्तु धन्य हैं वे जो उस महान दिन के आने से पहिले उसे पहिचान लेते हैं और उसके पुत्र यीशु के द्वारा उसके साथ अपना मेल कर लेते हैं।

वस्तुएं जो केवल एक-एक हैं

आज मैं आपको कुछ ऐसी वस्तुओं के बारे में बताने जा रहा हूं जिनके सम्बन्ध में बाइबल में लिखा है कि वे सब केवल एक ही एक हैं। अकसर आपने कुछ ऐसे विज्ञापन पढ़े होंगे जिनका शीर्षक होता है, "नक्कालों से सावधान !" इस प्रकार के विज्ञापन हमें चेतावनी देने के लिये छापे जाते हैं ताकि हम असली चीज़ के स्थान पर उसी प्रकार की किसी नकली चीज़ को खरीद कर न ले आएं, और साथ ही ऐसे विज्ञापनों में यह भी लिखा रहता है कि असली चीज़ की पहचान क्या है। ठीक ऐसे ही हमें बाइबल में मिलता है। बाइबल हमें बताती है कि कुछ वस्तुएं ऐसी हैं जो केवल एक-एक ही हैं और फिर बाइबल में उन वस्तुओं की कुछ विशेषताओं का वर्णन भी किया गया है ताकि हमें उन्हें पहचानने में कोई गलती न हो और हम उनके स्थान पर किसी और वस्तु को न अपना लें। आज जिस संसार में हम रहते हैं उसमें अनेक वस्तुओं का नकली रुप बनाया जा रहा है। और यह बात न केवल मसालों और मशीनों तक ही सीमित है, परन्तु नकली भगवान और ईश्वर और स्वर्ग में जाने के नकली मार्गों की भी कोई कमी नहीं है। परन्तु परमेश्वर की बाइबल हमें सावधान करके कहती है कि स्वर्ग और पृथ्वी का केवल एक ही परमेश्वर है और उसने सब मनुष्यों की मुक्ति के लिये केवल एक ही मार्ग को प्रगट किया है (१ कुरिन्थियों ८:६; यूहना १४:६) बाइबल कहती है कि जगत में सब मनुष्यों के उद्धार का केवल यही एक सुसमाचार है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र हमारे पापों के लिये मर गया और गाड़ा गया और तीसरे दिन फिर जी उठा। (१ कुरिन्थियों १५:३,४)। जब प्रेरित पौलुस ने बाइबल में कुरिन्थियों के नाम अपनी पत्री को लिखा था तो उसने उन से कहा था कि मैं तुम्हें फिर से वही सुसमाचार सुनाता हूँ जो पहिले

सुना चुका हूं, अर्थात् यीशु मसीह परमेश्वर की इच्छा से हमारे पापों के लिये मर गया और कब्र में गाड़ा गया और फिर जी उठा। (१ कुरिन्थियों १५:१,२)। और जब प्रेरित ने गलतियों के नाम अपनी पत्री को लिखा था तो उसमें उसने उन से कहा था कि मुझे बड़ा ही आश्चर्य होता है कि तुम उस सत्य सुसमाचार से इतनी जल्दी फिरकर किसी और ही तरह के सुसमाचार की ओर झुकने लगे हो। परन्तु वह उनसे आगे कहता है कि जिस को तुम सुसमाचार समझकर अब उसकी ओर झुक रहे हो वास्तव में वह सुसमाचार है ही नहीं। पर बात यह है, प्रेरित उन से कहता है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हे घबरा देते और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। मित्रो, परमेश्वर का केवल एक ही सुसमाचार है और केवल उसी सुसमाचार के द्वारा हम सब का उद्धार हो सकता है। और कोई दूसरा सुसमाचार है ही नहीं। (गलतियों १:६-९)।

परन्तु अब मैं आपका ध्यान प्रेरित द्वारा लिखी इफिसियों की पत्री के ऊपर दिलाना चाहता हूं। बाइबल में इस पत्री के चौथे अध्याय में परमेश्वर की प्रेरणा से लिखकर प्रेरित यों कहता है, "सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा ; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है।" (इफिसियों ४:१-६)। यहां हम देखते हैं, कि प्रभु का प्रेरित बिनती करके कह रहा है कि मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। और वह हमारा ध्यान इस बात की ओर दिलाता है सबसे पहिले, कि एक ही देह है। इसी देह का वर्णन करके प्रेरित बाइबल में एक अन्य स्थान पर कहता है, कि देह यीशु मसीह की कलीसिया है। (इफिसियों १:२२,२३)। अर्थात् यीशु

मसीह की केवल एक ही कलीसिया है। जिस प्रकार आज हम संसार में देखते हैं कि अलग-अलग नामों की सैंकड़ों कलीसियाएं हैं, ऐसे ही उस समय भी कुछ लोग भिन्न-भिन्न नामों की कलीसियाएं बना रहे थे। परन्तु प्रेरित उनसे कहता है, कि केवल एक ही कलीसिया है। यह कलीसिया यीशु मसीह की है। क्योंकि उसी ने कलीसिया को बनाया है। (मत्ती १६:१८)। कलीसिया जगत में उन सब लोगों का एक समूह है जिन्हों ने मसीह के सुसमाचार को माना है, जिन्हों ने अपने पापों से उद्धार प्राप्त किया है। (प्रेरितों २:३८, ४१, ४७)। और केवल एक ही सच्ची कलीसिया है। सो आज हमारे सामने यह एक बड़ा ही सुलगता हुआ सवाल है, कि क्या हम सब उस एक कलीसिया में हैं जिसमें एक होकर रहने की बिनती प्रेरित हमसे बाइबल में कर रहा है ?

किन्तु, फिर आगे वह कहता है, कि एक ही आत्मा है। परमेश्वर का वह आत्मा जिससे प्रभु के प्रेरितों को पवित्र शास्त्र में परमेश्वर का वचन लिखने की प्रेरणा मिली थी। (यूहना १४:२६;२ पतरस १:२१)। परमेश्वर का वह आत्मा जो सब कुछ प्रगट करता है और सब कुछ जानता है और जिससे कुछ भी छिपा नहीं रह सकता। (१ कुरिन्थियों २:१०; प्रेरितों ५:१-११)। और इसके आगे वह कहता है, कि तुम्हारी एक ही आशा है। आज संसार में लोगों की अलग-अलग आशाएं हैं। किसी को धन प्राप्त करने की आशा है तो किसी को अपनी तरक्की की आशा है। कुछ लोगों की आशा है कि वे इस जीवन के बाद फिर से इस जगत में एक पशु या मनुष्य का रुप लेकर आएंगे। परन्तु यहां प्रभु का प्रेरित जिस आशा का वर्णन कर रहा है वह एक अद्‌भुत आशा है। अर्थात्, जब हमारा प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग से प्रगट होगा तो वह हम सब को अपने साथ ले जाएगा ताकि हम उसके साथ स्वर्ग में अपने परमेश्वर के पास हमेशा तक रहें (१ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८; यूहन्ना १४: १-३) क्योंकि यीशु ने हमें धर्मी बनाने के लिये क्रूस के ऊपर अपने आप को बलिदान करके हमारे पापों का

प्रायश्चित किया है। और हम ने उस में विश्वास किया है और उसके सुसमाचार को माना है। इसलिये हमारी यह आशा है। क्या आप के पास यह अद्भुत आशा है?

परन्तु फिर हम इसके आगे देखते हैं, कि प्रेरित कहता है कि एक ही प्रभु है। अर्थात् यीशु मसीह, जिसने हमारा उद्धार करने के लिये अपने आप को बलिदान कर दिया और अपने लोहू को हमारे पापों के छुटकारे के लिये बहाकर हमें मोल ले लिया। (१ पतरस १:१८,१९;) प्रेरितों २:३६; फिलिप्पयों २:६-११)। इसलिये हमें उसकी सेवा करनी है और उसकी आज्ञाओं को मानना है। केवल वही हमारा प्रभु है। और इसके आगे वह कहता है कि एक ही विश्वास है। यह एक विश्वास वह विश्वास है जो परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है। (रोमियों १०:१७)। आज संसार में लोगों के भिन्न-भिन्न विश्वास हैं, कोई कुछ मानता है तो कोई कुछ मान रहा है। परमेश्वर ने हम सब को अपने वचन की केवल एक ही पुस्तक दी है, वह अपनी बाइबल के द्वारा हम सब से एक ही बात कहता है। परन्तु कुछ लोग उसके वचन की साधारण बातों को इस रीति से तोड़- मरोड़ कर मिलावट करके सिखा रहे हैं, कि आज लोग उसके वचन की एक ही शिक्षा को कई प्रकार से मान रहे हैं। जैसे कि प्रेरित, एक ही विश्वास है, कहने के बाद कहता है, कि एक ही बपतिस्मा है। और बाइबल हमें बताती है बड़ी ही स्पष्टता से कि यह एक बपतिस्मा यीशु मसीह की आज्ञा है। इसे पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से लेना चाहिए। (मत्ती २८:१९)। यह बपतिस्मा छोटे बालकों के लिये नहीं परन्तु उन लोगों के लिये है जो यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाते हैं और अपने पापों से मन फिराते हैं। (मरकुस १६:१५,१६; प्रेरितों २:३८)। यह बपतिस्मा उद्धार पाने के लिये या पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये लिया जाता है। और यह एक बपतिस्मा पानी का छिड़काव करके नहीं परन्तु पानी के भीतर गाड़े जाकर

लिया जाता है। (रोमियों ६:३,४; कुलुस्सियों २:१२; प्रेरितों ८:३८,३९)। परन्तु इतनी अधिक स्पष्ट शिक्षा के विपरीत भी आज हम देखते हैं कि बहुतेरे लोगों ने बाइबल के इस एक बपतिस्मे को हर प्रकार से बदल डाला है। कोई 'केवल' मसीह के नाम का बपतिस्मा दे रहा है, तो कोई छोटे बालकों को बपतिस्मा दे रहा है। कोई इसलिये बपतिस्मा दे रहा है कि बपतिस्मा लेनेवाले को उद्धार पहिले ही मिल चुका है, और कोई पानी की कुछ बूंदे छिड़ककर बपतिस्मा दे रहा है। परन्तु बाइबल आज भी हम सब से यही कहती है "कि एक ही बपतिस्मा है।"

मित्रो, क्या हम इस बात को भूल चुके हैं कि परमेश्वर की प्रेरणा से बाइबल को लिखनेवाला लेखक यह कहता है, "कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिस की चरचा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।" (प्रकाशितवाक्य २२:१८,१९)।

हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है, जैसे कि प्रेरित अंत में कहता है। वह जगत के सारे लोगों का परमेश्वर है। उसने लोगों को मानने के लिये अलग-अलग धर्म नही दिए हैं। परन्तु उसने संसार के सारे लोगों को अपनी एक ही पुस्तक दी है। इस पुस्तक अर्थात् बाइबल में उसने मनुष्य के लिये अपनी सम्पूर्ण इच्छा को प्रगट किया है। इस पुस्तक को परमेश्वर ने मनुष्य को इस जीवन में दिया है और आनेवाले जीवन में न्याय के दिन वह इसी पुस्तक को सब मनुष्यों के सामने खोलेगा और इसमें लिखी बातों के द्वारा वह हम सब का न्याय करेगा। (प्रकाशितवाक्य २०:११-१५)।

इसलिये आज एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न हम सब के सामने यह है कि क्या हम परमेश्वर की इच्छा पर चल रहे हैं, क्या हम उसकी पुस्तक में लिखी बातों को वैसे ही मान रहे हैं जैसे कि उसने हम सब से कहा है?

मेरा आप सब से निवेदनपूर्ण आग्रह है कि आप परमेश्वर की पुस्तक को अवश्य ही पढ़े और उसका अध्ययन करें। यदि आप ऐसा करेंगे तो आप अपने जीवन में एक नई आशा का अनुभव करेंगे। और यदि आप परमेश्वर की पुस्तक में लिखी बातों का अनुसरण करेंगे तो आपकी आशा एक अद्भुत वास्तविकता में बदल जाएगी, अर्थात् आप परमेश्वर के स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएंगे। हमें लिखिए, हम आपको बाइबल-सम्बन्धित ऐसे पाठ भेजेंगे जो बिल्कुल मुफ़्त हैं और जो बाइबल की बातों को समझने में आप की सहायता करेंगे।

उद्धार केवल मसीह में है

मित्रो :

इस कार्यक्रम को लेकर हम आपकी सेवा में इसलिये आते हैं ताकि हम आप को उस उद्धार से परिचित करवाएं जो मनुष्य को केवल मसीह में मिलता है। हम आपके सामने किसी धर्म का प्रचार नहीं कर रहे हैं। परन्तु हम आप को उस उद्धार का सुसमाचार दे रहे हैं जिसकी आप को आवश्यकता है। उद्धार का महत्व हम में से प्रत्येक मनुष्य के जीवन में बड़ा ही विशाल है। जिस तरह हम भोजन और पानी के बिना शारीरिक रुप से जीवित नहीं रह सकते। उसी तरह उद्धार के बिना हम आत्मिक रुप से मरे हुए हैं। इसलिये उद्धार हमारी परम आवश्यकता है। क्योंकि हमारे शरीर का अस्तित्व तो भोजन और पानी के रहते भी एक दिन अवश्य ही समाप्त हो जाएगा। परन्तु हमारी आत्मा का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा। क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर ने अपने आत्मिक स्वरुप पर बनाया है। (उत्पत्ति १:२७)। परन्तु मनुष्य और परमेश्वर का आत्मिक सम्बन्ध टूट चुका है। क्योंकि मनुष्य पापी है और परमेश्वर पवित्र है। इसलिये मनुष्य को उद्धार की आवश्यकता है। क्योंकि उद्धार का अर्थ है छुटकारा, अर्थात् पापों से मुक्ति प्राप्त करना, पाप से धुलकर फिर से पवित्र बन जाना। और जब मनुष्य अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर लेता है ; पाप के बन्धनों से मुक्त होकर छुटकारा प्राप्त कर लेता है; जब वह अपने पापों से धुलकर परमेश्वर के समान पवित्र बन जाता है, तो परमेश्वर के साथ उसका मेल हो जाता है। वह मनुष्य इस जीवन में परमेश्वर की भक्ति और उपासना करता है, क्योंकि उसने उस मनुष्य को पाप के बन्धनों से छुटकारा दिलवाया है। वह मनुष्य इस पृथ्वी पर अपना जीवन परमेश्वर के वचनानुसार निर्वाह करता है, और उसे इस जीवन में

यह आशा रहती है कि जब वह मर जाएगा तो वह परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करेगा जहां वह हमेशा परमेश्वर के साथ रहेगा, क्योंकि उसने अपने पापों से उद्धार पा लिया है।

परन्तु जितना महत्वपूर्ण उद्धार को पाना है, उतना ही महत्वपूर्ण यह जानना भी है कि उद्धार मनुष्य को कहां मिलेगा। कदाचित आज हम में से बहुतेरे उद्धार की आवश्यकता से परिचित हैं। परन्तु हम में से अनेक आज ऐसे भी हैं जो इस बात से अनजान हैं कि वास्तव में हमें उद्धार कहां मिल सकता है। बहुत से लोग आज उद्धार पाने के लिये जंगलों में भटक रहे हैं, तीर्थ-स्थानों में घूम रहे हैं। परन्तु क्या वहां उद्धार है? आज हमारे संसार में बहुतेरे लोग ऐसे भी हैं जो अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपने आप को कष्ट दे रहे हैं, वे अपने शरीर में नुकीली वस्तुएं चुभोकर और अन्य कई पीड़ाजनक कामों को करके अपनी देह को पीड़ित कर रहे हैं। परन्तु क्या ऐसे कामों को करके मनुष्य को उद्धार मिल सकता है? दूसरी ओर, बहुतेरे लोगों का आज ऐसा विचार है कि वे अपने अच्छे-भले कामों को करके अपना उद्धार प्राप्त कर लेंगे। सो वे गरीबों को खाना खिलाते हैं और कब्रों और मज़ारों पर फूल चढ़ाते हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने उद्धार प्राप्त करने के लिये विभिन्न धर्मों का सहारा लिया है। उद्धार प्राप्त करने की मनुष्य की प्रबल इच्छा और जिज्ञासा को देखकर आज विश्वभर में कुछ लोगों ने अपने आप को भगवान और गुरु कहना आरम्भ कर दिया है। उन्होंने बड़े-बड़े धार्मिक आश्रम और संस्थान खोल दिये हैं, और वे लोगों को अपने पास बुलाते हैं कि हमारे पास आकर शांति तथा उद्धार प्राप्त कर लो। परन्तु क्या उनके पास उद्धार है ? कौन मनुष्य को उद्धार दे सकता है ? उद्धार कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो जंगलों और तीर्थ-स्थानों में प्राप्त होती है। उद्धार कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे मनुष्य अपने आप को कष्ट देकर या कुछ अच्छे कामों को करके प्राप्त कर सकता है। और न ही कोई मनुष्य जगत में ऐसा है जो पाप से मनुष्य का उद्धार कर सकता है। किन्तु मनुष्य का उद्धार केवल परमेश्वर कर सकता है।

इसलिये यह बड़ा ही आवश्यक है कि यह जानने के लिये कि मनुष्य को उद्धार कहां और कैसे मिलेगा हम परमेश्वर के वचन की उस पुस्तक में से पढ़ें जिस में परमेश्वर ने मनुष्य के लिये अपनी इच्छा को प्रगट किया है। पवित्र बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमन्ड करे।" (इफिसियों २:८,९)। सो परमेश्वर के वचन के द्वारा हम यह देखते हैं, कि मनुष्य का उद्धार विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से होता है। अर्थात् उद्धार को मनुष्य अपने किसी भी प्रयत्न के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकता, परन्तु मनुष्य का उद्धार परमेश्वर के प्रेम और उसकी कृपा और उसकी दया से होता है। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा" बाइबल में लिखा है, "कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। यह है परमेश्वर का अनुग्रह जो जगत में मनुष्यों का उद्धार करने के लिये स्वर्ग से प्रगट हुआ है। अर्थात् परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत के पापों के लिये दे दिया। "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है," पवित्र बाइबल में लिखा है, "परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"(रोमियों ६:२३)। सो यीशु मसीह जगत के लिये परमेश्वर का अनुग्रह है, जिस में परमेश्वर हमें उद्धार अर्थात् अनन्त जीवन का बरदान देता है।

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल हमें बताती है, कि यीशु मसीह परमेश्वर का सामर्थी वचन था जिसे परमेश्वर ने मनुष्य बनाकर जगत में भेज दिया। (यूहन्ना १:१,२,१४)। आज बहुत से लोग प्रभु यीशु मसीह को केवल इसलिये जानते हैं क्योंकि उसने लोगों को बड़ी अच्छी-अच्छी शिक्षाएं दी थीं, क्योंकि उसनें बीमारों को चंगा किया था और अनेक अन्य सामर्थपूर्ण काम किए थे। परन्तु पवित्र बाइबल हमें बताती है कि यीशु को परमेश्वर ने जगत में मरने के लिये भेजा था। उसकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर उसे सारे जगत के पापों का प्रायश्चित

बनाना चाहता था। (१यहून्ना २:२)। सो हम बाइबल में इस प्रकार पढ़ते हैं "इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किये गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। वरन इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे; और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहरानेवाले हो" "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे ? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे।" (रोमियों ३:२३-२६;५:६-१०)।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को सारे जगत का उद्धारकर्त्ता ठहराया है। उसका लोहू बहाकर परमेश्वर ने उसे सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया है। यीशु का लोहू हमारे पापों के बदले में बहाया गया, ताकि हम अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके धर्मी बन जाएं, और हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाए। यीशु के भीतर परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपने प्रेम और अनुग्रह को प्रगट किया है। इसलिये यदि आज कोई भी मनुष्य वास्तव में उद्धार पाना चाहता है तो यह आवश्यक है कि वह यीशु के पास आए, जिस में, बाइबल कहती है, हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है। और यीशु मसीह के पास आने के लिये बाइबल कहती है कि मनुष्य को उस में

विश्वास करना चाहिए कि वह मेरे पापों के बदले मे क्रूस के ऊपर मारा गया था । और यह विश्वास करने के बाद उसे अपना मन फिराना चाहिए, अर्थात् पाप को छोड़कर धार्मिकता के लिये जीवन बिताने का निश्चय करना चाहिए। और फिर उस मनुष्य को अपने सब पिछले पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए, जिसका अर्थ है पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से जल के भीतर गाड़े जाना और जो यह प्रगट करता है कि जिस प्रकार यीशु मनुष्य के पापों के लिये मर गया और वह कब्र के भीतर गाड़ा गया और उस में से बाहर निकलकर जी उठा, वैसे ही बपतिस्मा लेकर वह मनुष्य पाप के लिये मर गया और दफ़न हो गया और जल-रुपी-कब्र में से बाहर निकलकर एक नए जीवन की चाल चलने के लिये जी उठा है। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८; रोमियों ६:३-६)।

मित्रो, हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है। और उस परमेश्वर ने हम सब को उद्धार पाने का केवल एक ही मार्ग दिया है, अर्थात् उसका पुत्र यीशु मसीह जो जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मारा गया था। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं ; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४:१२)। और प्रभु यीशु ने ये शब्द कहे कि : "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना ३:१६)।

क्या आप उद्धार पाना चाहते हैं ? क्या आप परमेश्वर के साथ अपना मेल करना चाहते हैं ? यीशु के पास आईये, उसमें विश्वास कीजिए और उसकी आज्ञाओं को मानिए। केवल वही आपका उद्धार कर सकता है।

उद्धार परमेश्वर का एक दान है

मित्रो :

एक बार फिर से हम आपके सामने बाइबल के एक बड़े ही मुख्य पाठ को प्रस्तुत करने जा रहे हैं। बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है, अर्थात् इस पुस्तक में वे बातें लिखी हुई हैं जिन्हें परमेश्वर मनुष्य को बताना चाहता है। इस पुस्तक में परमेश्वर हम को बताता है कि वह जगत में सारे लोगों से प्रेम करता है और वह सबको पाप के भयानक परिणाम से बचाकर स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। यूं तो हमारे संसार में बहुत सी पुस्तकें हैं और कुछ पुस्तकें ऐसी भी हैं जो बाइबल की ही तरह धर्म-शास्त्र कहलाती हैं। लोग उन्हें पढ़ते हैं और उन पुस्तकों को अपने धर्म की पुस्तक मानते हैं। परन्तु बाइबल किसी धर्म की पुस्तक नहीं हैं, यह हमारे परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। इस पुस्तक को परमेश्वर ने हमें किसी मन्दिर या पवित्र स्थान में रखने को नहीं दिया है, परन्तु इस किताब को परमेश्वर ने हमें पढ़नें के लिये दिया है। वह चाहता है कि इस पुस्तक में लिखी बातों को हम सब पढ़ें और सुनें और उसकी इच्छा पर चलकर अपने पापों से उद्धार प्राप्त करें, ताकि जब हमारा पृथ्वी पर का जीवन समाप्त हो जाए तो हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करके उसके साथ अनन्तकाल तक रहें। उद्धार प्राप्त करने का अर्थ यही है। जब कि अन्य पुस्तकें हमें यह बताती हैं कि उद्धार प्राप्त करके मनुष्य परम-आत्मा में लीन हो जाएगा, अर्थात् मनुष्य का व्यक्तिगत अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। बाइबल हम से कहती है, कि हम अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके व्यक्तिगत रुप से परमेश्वर के साथ रहेंगे, और उसकी महिमा में उसके साथ सहभागी होंगे और उसकी आशीषों का आनन्द उठाएंगे। परमेश्वर हमें एक आत्मिक देह देगा जिस में हम हमेशा उसके साथ रहेंगे।

(प्रकाशितवाक्य २१:३-८, १ कुरिन्थियों १५:१२-५८)। जब कि अन्य पस्तकें सिखाती हैं कि मनुष्य का उद्धार स्वयं मनुष्य के धर्म के कामों के कारण ही होगा। बाइबल में परमेश्वर हम से कहता है कि हमारा उद्धार उसके अनुग्रह से होगा। अर्थात् हम परमेश्वर के उद्धार को अपने प्रयत्नों तथा परिश्रम से प्राप्त नहीं कर सकते, पर हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से होगा। और जबकि अन्य पुस्तकें परमेश्वर को मनुष्य के सामने केवल एक न्यायी के समान प्रस्तुत करती हैं। बाइबल हमें बताती है कि हमारा परमेश्वर प्रेम है जिस ने पाप से हमारा उद्धार करने के लिये अपने आप को हमारे लिये दे दिया है।

बाइबल में हमें एक सुसमाचार मिलता है और परमेश्वर की यह आज्ञा है कि इस सुसमाचार को सारे जगत में सब लोगों को सुनाया जाए। और बाइबल का सुसमाचार यह है कि परमेश्वर यीशु मसीह में होकर स्वर्ग से पृथ्वी पर आ गया। वह इस जगत में न्याय करने को नहीं आया; वह अपने शत्रुओं से लड़ने को नहीं आया; वह पापियों को दन्ड देने और बुरे लोगों को नाश करने को जगत में नही आया। परन्तु वह उन सब लोगों को जो पाप में थे, जो बुरे और अधर्मी थे, जो अपने चाल चलन से परमेश्वर के शत्रु और बैरी थे बचाने को पृथ्वी पर आया। अक्सर आप ने कुछ लोगों को यह कहते सुना होगा कि जब-जब संसार में बुराई और पाप बढ़ा, तब-तब जगत में अधर्मियों को नाश करने के लिये परमेश्वर ने अवतार लिया, अर्थात् वह किसी एक अवतार के रुप में जगत में अधर्मियों का नाश करने के लिये आ गया। परन्तु यीशु मसीह जगत में इसलिये नहीं आया। इसके विपरीत बाइबल हमें यह बताती है कि परमेश्वर यीशु मसीह में होकर जगत का उद्धार करने को पृथ्वी पर आ गया। वह पापियों को नाश करने को जगत में नहीं आया, वह अधर्मियों को उनके अधर्म का दन्ड देने को जगत में नहीं आया, परन्तु वह जगत के सारे पापी और अधर्मी लोगों का उनके पाप और अधर्म से उद्धार करने को जगत में आया। पवित्र बाइबल में लिखा है, "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम

पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:६-८)। परमेश्वर अपनी बाइबल के द्वारा हमें बताता है कि यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा उसने जगत के सारे लोगों के पापों का प्रायश्चित किया है। मनुष्य को पाप से उद्धार की आवश्यकता है। पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है। पाप मनुष्य और परमेश्वर के बीच में एक बैर के समान है। और परमेश्वर ने मनुष्य के पाप का प्रायश्चित यीशु की मृत्यु के द्वारा किया है। इसलिये यीशु की मृत्यु संसार में प्रत्येक मनुष्य के लिये एक सुसमाचार है। और परमेश्वर का यह सुसमाचार हमारे लिये एक तार के समान है। मान लीजिए आपने अपने किसी मित्र के दस हज़ार रुपये चुकाने हों, परन्तु आपके पास चुकाने को कुछ भी नहीं है, और इस कारण उस मित्र और आपके बीच में शत्रुता पैदा हो जाती है। वह आप से बोलता नहीं और आप उसके रुपए न देने के कारण अपना मुंह छिपाते फिरते हैं। परन्तु तभी एक दिन एकाएक आपको एक तार मिलता है और भेजनेवाले की ओर से आपको उसमें यह समाचार मिलता है कि "मैं दस हजार रुपए का एक चेक आप के लिये भेज रहा हूं इस से आप अपना कर्ज़ा चुका सकते हैं।" अब आप क्या करेंगे ? इस समाचार को सुनकर आप सचमुच में बड़े ही खुश होंगे। आप उस चेक की पूरी उत्सुकता के साथ प्रतिक्षा करेंगे। और जैसे ही वह चेक आप को मिलेगा आप उसे बैंक में जमा करवाएंगे, और फिर पैसे को लेकर आप अपने उस मित्र को देंगे जिस का कर्ज़ा आपने चुकाना है। अब उसके साथ आपका सम्बन्ध ठीक हो जाएगा, अब आप दोनों का मेल हो जाएगा। क्योंकि बैर का कारण समाप्त हो चुका है, आपने कर्ज़ा चुका दिया है। परन्तु कर्ज़ा चुकाने का दाम कहां से आया ? वह आपको किसी के प्रेम के कारण मुफ़्त में दान स्वरुप प्राप्त हुआ। जिस के लिये आप ने कोई परिश्रम नहीं किया, कोई दुख नहीं उठाया। परन्तु मान लीजिए यदि आप उस चेक को अपने पास रखकर बैठ जाते, या मान लीजिए आप यह विश्वास कर लेते कि अब मेरे पास दस हज़ार रुपए आ गए हैं, अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। क्या ऐसे विश्वास से आप का कर्ज़ा चुक जाता ? नहीं। आपके

लिये जितना ज़रुरी वह चेक था, उतना ही उस चेक को जमा करवाना और बैंक से पैसा लेकर अपने मित्र को देना भी ज़रुरी था।

ठीक यही बात हम बाइबल के सुसमाचार के सम्बन्ध में भी देखते हैं। बाइबल का सुसमाचार एक तार के समान है जिसमें हमें यह सुसमाचार मिलता है, कि यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया और गाड़ा गया और तीसरे दिन फिर जी उठा। (१ कुरिन्थियों १५:१-४)। पवित्र बाइबल के अनुसार क्रूस के ऊपर यीशु मसीह की मृत्यु इसलिये हुई ताकि पाप का वह बैर जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच में है और जिस के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है समाप्त हो जाए। "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है," बाइबल मैं लिखा है, "परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६:२३)। और फिर आगे लिखा है "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमन्ड करे।" (इफिसियों २:८,९)। सो क्रूस के ऊपर यीशु मसीह की मृत्यु जगत में प्रत्येक मनुष्य के लिये परमेश्वर का एक वरदान है। उसे परमेश्वर ने हमारे लिये दान स्वरुप दे दिया। जब हम पापी तथा अधर्मी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा ! (रोमियों ५:८)।

इस बात को ध्यान में रखकर कोई यह कैसे कह सकता है, कि मनुष्य का उद्धार उसके अपने कामों के द्वारा होगा। चाहे कोई मनुष्य कितना भी अच्छा जीवन क्यों न व्यतीत कर ले, और चाहे कितने भी अच्छे भलाई के काम क्यों न कर ले, तौभी उसका उद्धार केवल परमेश्वर के अनुग्रह ही से होगा। क्योंकि कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जिसने परमेश्वर के लेखे में कभी कोई पाप न किया हो। और मनुष्य का एक ही पाप उसे स्वर्ग में प्रवेश करने से रोकने के लिये बहुत है। परन्तु यद्यपि कि यीशु मसीह परमेश्वर की इच्छा से सारे जगत के लोगों के

पापों के प्रायश्चित के लिये मर गया। और यद्यपि कि संसार में प्रत्येक मनुष्य का उद्धार केवल परमेश्वर के अनुग्रह ही से होगा। तौभी यह आवश्यक है, बाइबल हमें सिखाती है, कि परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार पाने के लिये हर एक मनुष्य उसकी इच्छा को माने और उसकी आज्ञा का पालन करे। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसकी आज्ञा का पालन करके हम उद्धार को अपने परिश्रम से प्राप्त कर रहे हैं। पर आज्ञा को मानकर हम अपने विश्वास को प्रगट कर रहे हैं। जिस प्रकार अभी कुछ देर पहिले हमने उस चेक के विषय में देखा था। यदि उस मनुष्य को उस चेक पर विश्वास न होता तो वह उसे लेकर बैंक में जमा करवाने नहीं जाता। परन्तु यदि वह उस चेक पर केवल विश्वास ही करता तो उसे दस हज़ार रुपए कभी नहीं मिल पाते। परन्तु वह मनुष्य उस चेक को लेकर बैंक में गया और उसे जमा करवाकर उसके बदले में उसने दस हज़ार रुपए लिये। किन्तु, क्या इसका अर्थ यह हुआ कि उस ने उन दस हज़ार रुपयों को अपने परिश्रम के द्वारा प्राप्त किया था ? बिल्कुल नहीं। वे रुपए उसके लिये एक मुफ़्त दान था, यद्यपि कि उस चेक के स्थान पर रुपए लेने के लिये उस मनुष्य को कुछ करना पड़ा। इसी तरह से परमेश्वर का वरदान भी है। उसने सारे जगत से प्रेम रखा; उसके अनुग्रह से उसका पुत्र यीशु जगत के सारे लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया। और बाइबल में लिखा है कि हमें उद्धार पाने के लिये यीशु मसीह और उसके सुसमाचार पर विश्वास करना चाहिए। (यूहन्ना ३:१६; मरकुस १६:१६)। परन्तु, केवल विश्वास करने से ही हमारा उद्धार नहीं हो जाता। (याकूब २:१९,२०)। परन्तु हमें परमेश्वर की उस आज्ञा को भी मानना चाहिए जिसे मानने के द्वारा हमारे पाप क्षमा हो सकते हैं। क्या आप ने परमेश्वर की आज्ञा को माना है ? परमेश्वर बाइबल में कहता है कि हर एक मनुष्य को चाहिए कि वह पाप से अपना मन फिराए और फिर अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। (प्रेरितों २:३८)। बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य यीशु मसीह की मृत्यु की

समानता में जल के भीतर गाड़ा जाता है और उसके जी उठने की समानता में जल में से बाहर आता है। (रोमियों ६:३-५)।

बाइबल में लिखा है कि "परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।" (तीतुस २:११)। परन्तु, प्रश्न यह है, कि क्या आप ने उस उद्धार को पा लिया है ? मित्रो, यह बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। और इसके केवल दो ही उत्तर हो सकते हैं, अर्थात् हां या नहीं। किन्तु बाइबल कहती है कि इस बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर हम क्योंकर बच सकते हैं ? (इब्रानियों २:३)।

उद्धार पाने के लिये सुसमाचार का पालन करना आवश्यक है

इस कार्यक्रम में हम संसार की उस ~~श्रेष्ठ पुस्तक~~ में से अध्ययन करते हैं जिसे लोग बाइबल के नाम से जानते हैं। बाइबल परमेश्वर का वचन है। यदि आप इस पुस्तक को स्वयं पढ़ेंगे तो आप इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि बाइबल वास्तव में परमेश्वर का वचन है। इस पुस्तक में परमेश्वर ने जगत के सारे लोगों को एक सुसमाचार दिया है, और वह सुसमाचार यह है कि जगत के सारे लोग उसके अनुग्रह से अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। बाइबल हमें बताती है कि जो हम सबका सच्चा परमेश्वर है वह जगत में सारे लोगों से प्रेम करता है और वह सबका उद्धार करना चाहता है। परन्तु उसने अपनी बाइबल में यह प्रगट किया है कि प्रत्येक मनुष्य को उद्धार पाने के लिये उसके सुसमाचार का पालन करना आवश्यक है। बाइबल में लिखा है, कि एक दिन परमेश्वर जगत के सब लोगों का न्याय करेगा और "उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे।" (२ थिस्सलुनीकियों १:७-९)। सो जबकि परमेश्वर की ओर से हमें ऐसी गम्भीर चेतावनी मिली है, यह बड़ा ही ज़रुरी है कि हम में से प्रत्येक मनुष्य इस बात से परिचित हो कि परमेश्वर का सुसमाचार क्या है और मनुष्य किस तरह से उसके सुसमाचार को मान सकता है। और आज हम अपने पाठ में इसी विषय के ऊपर विचार करेंगे। सो, आईए, सबसे पहिले देखें कि बाइबल के अनुसार सुसमाचार क्या है।

बाइबल में १ कुरिन्थियों १५ अध्याय में प्रेरित पौलुस कुरिन्थुस में मसीह की कलीसिया को लिखकर इस प्रकार कहता है, "हे भाईयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो ; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मै ने सबसे पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" सो यीशु मसीह की मृत्यु और उसका कब्र के भीतर गाड़े जाना और उस कब्र में से जी उठना सुसमाचार का आधार है। प्रेरित पौलुस, जैसा कि अभी हमने बाइबल में से पढ़ा, उन लोगों से कहता है, कि इस सुसमाचार को मैंने तुम्हें पहिले भी सुनाया था, और तुम ने उसे अंगीकार किया था और उसी के द्वार तुम्हारा उद्धार भी हुआ है।

परन्तु यह बात, कि यीशु मसीह मारा गया और गाड़ा गया और फिर जी उठा किस प्रकार से एक सुसमाचार हो सकती है? इस सुंदर सच्चाई को हम केवल तभी समझ सकते हैं जब हम पहिले इस बात को समझ लें कि यीशु मसीह वास्तव में कौन था और वह किस लिये मारा गया था। करोड़ों लोग आज संसार में यीशु मसीह में विश्वास करते हैं। कोई उसे अवतार मानता है तो कोई उसे महापुरुष मानता है। किसी के लिये वह एक भविष्यद्वकता है तो किसी के लिये एक भगवान। परन्तु बाइबल हमें यह बताती है कि यीशु मसीह सच्चे और जीवते परमेश्वर का एकलौता पुत्र है। जब एक बार यीशु ने अपने चेलों से पूछा था कि लोग उसे क्या कहते हैं, तो चेलों ने यीशु से कहा था कि कुछ लोग तुझे एलियाह कहते हैं और कुछ यिर्मयाह कहते हैं और कुछ अन्य भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं। यह सुन यीशु ने उन से कहा परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो ? इस पर वे चेले जो यीशु के साथ रहे थे, जिन्होंने उसके अद्भुत कामों को देखा था, उनमें से एक ने जवाब देकर कहा "कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" (मत्ती १६:१६)। मित्रो, जो मनुष्य यीशु को वास्तव

में नहीं जानता वह उसके सुसमाचार को नहीं समझ सकता। अवतारों और भगवानों के इस जगत में अनेक लोग यीशु की तुलना भी उन से करना चाहते हैं, वे यीशु को उन में से कोई एक मानते हैं। इसी कारण यीशु की मृत्यु उनके लिये कोई महत्व नहीं रखती। इसलिये यह बड़ा ही आवश्यक है कि यीशु की मृत्यु के सुसमाचार को समझने के लिये हम पहिले यीशु को समझें।

पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि यीशु का जन्म पवित्र आत्मा की सामर्थ से परमेश्वर की एक भक्त कुवांरी के द्वारा हुआ था। (मत्ती १:१८-२५)। यीशु परमेश्वर का वह सामर्थी वचन था जिसके द्वारा परमेश्वर ने सारी सृष्टि को रचा है। (यूहन्ना १:१-३)। उसी को परमेश्वर ने मनुष्य की देह पहिनाकर इस जगत में भेज दिया, ताकि वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मारा जाए। (यूहन्ना १:१४;१ यूहन्ना ४:१०)। अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व प्रभु यीशु ने स्वयं इस प्रकार कहा था, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। यीशु को लोगों ने क्रूस के ऊपर इसीलिये चढ़ाया था क्योंकि यीशु ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र घोषित किया था। यदि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र नहीं था तो वह इस बात से इंकार करके अपने आप को क्रूस की भयानक मृत्यु से बचा सकता था। परन्तु बाइबल में लिखा है, कि उस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा। (इब्रानियों १२:२)। यीशु जानता था कि वह कौन है, उसे मालूम था कि वह क्रूस के ऊपर क्यों मर रहा है, वह जानता था कि उसकी मृत्यु का कारण उसे क्रूस पर चढ़ानेवाले लोगों की ईर्ष्या नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा है। और बाइबल कहती है कि उस ने परमेश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आपको ऐसा खाली कर दिया, और एक दास का स्वरुप धारण किया, और मनुष्य की समानता में

हो गया। और मनुष्य के रुप में प्रगट होकर उस ने अपने आप को ऐसा दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की जैसी भयानक मृत्यु भी सह ली। (फिलिप्पियों २:६-८)।

इसलिये, मित्रो, यीशु केवल एक मनुष्य नहीं परन्तु परमेश्वर का पुत्र था। क्रूस के ऊपर यीशु की मृत्यु एक मनुष्य की मृत्यु नहीं परन्तु मनुष्य के रुप में परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु थी। वह परमेश्वर की इच्छा से जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये मारा गया था। यीशु की मृत्यु जगत के पापों के कारण हुई। इसलिये यीशु की मृत्यु जगत में प्रत्येक मनुष्य के लिये एक सुसमाचार है, एक खुशखबरी है, खुशी का एक पैग़ाम है। और यह प्रमाणित करने के लिये कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर ने यीशु को उसकी मृत्यु के तीसरे दिन बाद फिर से ज़िन्दा कर दिया। इसीलिये अभी हम ने बाइबल में से पढ़ा था कि प्रेरति पौलुस कहता कि जिस सुसमाचार से हमारा उद्धार होता है वह यह है कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया और गाड़ा गया और तीसरे दिन फिर जी उठा!

परन्तु अब हमारे सामने प्रश्न यह है, कि इस सुसमाचार के द्वारा मनुष्य का उद्धार किस प्रकार होता है ? एक अन्य स्थान पर, रोमियों के नाम अपनी पत्री में कुछ लोगों को लिखकर प्रेरित इस प्रकार कहता है "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढ़ाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" (रोमियों ६:१७,१८)। सो हम देखते हैं कि जिस उपदेश को उन लोगों ने प्रेरित से सुना था, अर्थात् यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया और गाड़ा गया और फिर जी उठा, उसे उन्होंने माना था, वे उसके सांचे में ढाले गए थे, और इस प्रकार पाप से उनका उद्धार हुआ था। इसलिये मसीह के सुसमाचार के द्वारा हमारा उद्धार उस समय होता है जब हम उसके सुसमाचार को

मानकर उसके सांचे में ढाले जाते हैं। परन्तु यह किस तरह होता है ? मनुष्य किस प्रकार मसीह के सुसमाचार को मानता है ? किस तरह से वह उसके सुसमाचार के सांचे में ढाला जा सकता है ? इस सम्बन्ध में हम देखते हैं, कि उन्हीं लोगों को लिखकर, जिनके बारे में प्रेरित कहता है कि उन्होंने सुसमाचार को माना था और जो उसके सांचे मे ढाले गए थे, प्रेरित उन से कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उस के साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।" (रोमियों ६:३-५)।

सो इन सब बातों से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि बाइबल का सुसमाचार यह है कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया और गाड़ा गया और तीसरे दिन वह फिर जी उठा। इस सुसमाचार के द्वारा हमारा उद्धार तब होता है जब हम इसे मानकर इसके सांचे में ढाले जाते हैं। और सुसमाचार को मानने के लिये हमें बपतिस्मा लेना चाहिए। क्योंकि बपतिस्मा लेने के द्वारा हम यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने और जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाते हैं, और इस तरह हम उसके सुसमाचार के सांचे में ढाले जाते हैं। क्योंकि बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य पिता परमेश्वर और उसके पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से एक मरे हुए मनुष्य की समानता पर पानी के भीतर दफ़नाया जाता है और एक नए मनुष्य की समानता पर पानी की उस कब्र में से बाहर निकलता है। परन्तु बपतिस्मा लेने से पहिले यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने सारे मन से यीशु मसीह पर विश्वास करे,

क्योंकि यीशु ने कहा है, कि जो मनुष्य विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों ८:३५-३९)।

क्या आपने मसीह के सुसमाचार को माना है ? मेरा कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्या आप के ऊपर पानी की कुछ बूंदें छिड़की गई हैं ? लेकिन मेरे कहने का अर्थ यह है कि क्या आप आपने पापों की क्षमा के लिये मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने की समानता में उसके साथ एक होने के लिये बपतिस्में के द्वारा पानी के भीतर गाड़े गए हैं ? क्या आप मसीह के जी उठने की समानता में उसके साथ एक होने के लिये बपतिस्मे के पानी में से बाहर निकले हैं ?

मित्रो, उद्धार पाने के लिये यह आवश्यक है कि आप मसीह के सुसमाचार को मानें।

सब का उद्धार नहीं होगा

जब से मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर अदन की बाटिका में से निकला है उसे इस बात का अहसास है कि उसे उद्धार की आवश्यकता है। उसका विवेक उसे दोषी ठहराता है। जब से मनुष्य बचपन की अवस्था को छोड़कर एक व्यस्क बन जाता है अर्थात् जब वह अच्छाई और बुराई में अन्तर को समझने लगता है, तभी से वह परमेश्वर की आवश्यकता क़ा अनुभव करने लगता है। उसे इस बात का आभास होने लगता है कि वह एक पापी है और उसे पाप से मुक्ति की आवश्यकता है। सो वह अपने पापों से उद्धार पाने के लिये परमेश्वर के पास आना चाहता है। आपने अकसर देखा होगा कि जब रेलगाड़ी किसी नदी या नहर के पास से होकर गुज़रती है तो कुछ लोग उस में पैसे फेंकते हैं। क्यों ? क्योंकि मनुष्य कुछ अच्छाई करके कुछ देकर अपने पापों से उद्धार पाना चाहता है। लोग परमेश्वर की बनाई हुई प्राकृतिक वस्तुओं की उपासना करना चाहते हैं। कोई किसी पेड़ को पूजता है तो कोई सूर्य को पानी चढ़ाता है। कुछ लोग मूर्तियों को पूजते हैं, तो कुछ लोग गुरुओं और भगवानों को भेंट चढ़ाते हैं। यानि किसी न किसी रुप में और किसी न किसी तरह से लोग परमेश्वर की उपासना करना चाहते हैं, उसे प्रसंत्र करना चाहते हैं। क्योंकि मनुष्य को यह एहसास है कि उसके भीतर पाप है और उसे अपने पाप से उद्धार की आवश्यकता है। और इस में कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर के लेखे में प्रत्येक मनुष्य ने पाप किया है। परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में लिखा है, "कि वे सब के सब पाप के वश में हैं.....कोई धर्मी नहीं, एक भी

नहीं.....इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों ३:९,१०,२३)।

परन्तु परमेश्वर प्रेम है, और क्योंकि वह जानता है कि जगत में सब मनुष्यों ने पाप किया है, और सब के सब पापी हैं, और पाप के कारण वे उसकी महिमा से रहित हैं और उस से अलग और दूर हैं। इसलिये उसने सब मनुष्यों के उद्धार के लिये स्वर्ग से उद्धार के एक मार्ग को प्रगट किया है। और उसी उद्धार के मार्ग को सब मनुष्यों को बताने के लिये परमेश्वर नें अपने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से बाइबल को लिखवाया है। बाइबल में परमेश्वर की ओर से हमें यह संदेश मिलता है कि मनुष्य का उद्धार करने के लिये परमेश्वर स्वयं प्रभु यीशु मसीह में होकर पृथ्वी पर आ गया। अर्थात् परमेश्वर यीशु मसीह में होकर एक मनुष्य बन गया। उसने मनुष्यों के साथ रहकर मनुष्य की तरह जीवन व्यतीत किया, पर उसने कभी कोई पाप नहीं किया। वह प्रत्येक बात में मनुष्यों की तरह परखा तो गया परन्तु तौभी वह निष्पाप निकला। मनुष्यों के बीच जन्म लेकर और मनुष्य का सा जीवन व्यतीत करके परमेश्वर ने हमें यह सिखाया कि यीशु मसीह के जीवन को अपने जीवन का आदर्श बनाकर हम भी उसकी तरह एक निष्पाप और पापरहित जीवन व्यतीत कर सकते हैं। बाइबल में लिखा है, "क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (१ पतरस २:२१-२४)।

सो न केवल हम यह देखते हैं कि मसीह ने अपने जीवन के द्वारा पृथ्वी पर हमारे लिये एक पाप-रहित जीवन का आदर्श छोड़ा परन्तु बाइबल हमें यह भी बताती है कि वह हमारे पापों को अपनी देह के उपर लेकर क्रूस के ऊपर चढ़ गया ताकि हम पापों के लिये मरके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं। अर्थात् यीशु मसीह हमारे पापों के लिये क्रूस के ऊपर मर गया। इसलिये हम अपने धर्म के कामों के कारण उद्धार नहीं पा सकते। हम कोई ऐसा अच्छा काम नहीं कर सकते जिसके कारण हमें उद्धार मिल सकता है, और न ही किसी वस्तु को पूजने के द्वारा हमारा उद्धार हो सकता है। हमें इस बात को अनुभव करना चाहिए कि हमारा उद्धार केवल परमेश्वर ही कर सकता है। परन्तु अपनी मनमानी करके या अपने प्रयत्नों से परमेश्वर को प्रसन्न करके हम कदापि उद्धार नहीं पा सकते। यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं तो यह बड़ा ही आवश्यक है कि हम मनुष्यों के बनाएं रीति रिवाज़ों और सदियों से चले आ रहे मनुष्यों के बनाए हुए धर्म के कामों से अपना मन फिराकर सच्चे तथा जीवते परमेश्वर के पास आएं। और जो कुछ वह हम से अपने वचन की पुस्तक के द्वारा कहता है उसे सुनें और मानें। अपनी पुस्तक बाइबल में वह हम से कहता है कि उसने संसार के सब लोगों के पापों के कारण यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर बलिदान किया है। यीशु मसीह सारे जगत के पापों को अपनी देह के ऊपर लेकर क्रूस पर चढ़ गया और अपने प्राणों को बलिदान करके उसने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया। अर्थात् यीशु को परमेश्वर ने हमारे पापों के छुटकारे के लिये दे दिया। और बाइबल कहती है, कि जब हम अपने सारे मन से यीशु मसीह में यह विश्वास ले आते हैं कि वह हमारे पापों के लिये क्रूस के ऊपर मर गया। तो हमें चाहिए कि हम अपने पिछले जीवन के सारे अज्ञानता और अधर्म के कामों से अपना मन फिराएं। और फिर अपने सब पापों की क्षमा के लिये पिता अर्थात् परमेश्वर और पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा लें। जिसका अर्थ है मन फिराने के द्वारा अपने पापों के लिये मरके अपने वर्तमान मनुष्य को पानी के

भीतर उस प्रकार दफ़ना दें जैसे कि एक मरे हुए इन्सान को कब्र के भीतर गाड़ा जाता है, और फिर उस पानी की कब्र में से बाहर निकलकर उस नए जीवन का आरम्भ करें जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की इच्छा पर चलता है। (मत्ती २८:१८-२०;प्रेरितों २:३८; प्रेरितों ८:३५-३९; रोमियों ६:३-६ ; कुलुस्सियों २:१२ -२३; ३:१-१७

परन्तु जबकि परमेश्वर के उद्धार के इस सुसमाचार का प्रचार आज सारे जगत में किया जा रहा है। तौभी आज इस पृथ्वी पर बहुत थोड़े ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के उद्धार के सुसमाचार को सुनकर उसे मान रहे हैं। यद्यपि कि परमेश्वर इतना अधिक दयालू और प्रेमी है कि उसने यीशु मसीह में होकर हमारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया और यद्यपि कि उसकी इच्छा है कि सारा जगत उसके सुसमाचार के द्वारा उद्धार पाए। तौभी यह एक सच्चाई है कि जगत में सब का उद्धार नहीं होगा। क्योंकि जगत में कुछ लोगों के लिये परमेश्वर का यह साधारण सुसमाचार एक ठोकर का कारण है। एक मनुष्य के बलिदान से सारे जगत का उद्धार कैसे हो सकता है ? लोग हैरान होकर पूछते हैं। उनकी दृष्टि में यह एक बड़ा ही सरल और मुफ़्त का छुटकारा है। उनकी धारणा यह है कि पाप क्योंकि मनुष्य ने किया है, इसलिये मनुष्य को ही अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये कुछ करना है। परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार को स्वीकार करने के विपरीत अपने पापों से उद्धार पाने के लिये वे तीर्थ यात्राएं करना चाहते हैं और अपने आप को दुख देना चाहते हैं, और बलिदान करना चाहते हैं। जो शब्द आज से लगभग उन्नीस सौ वर्ष पूर्व प्रेरित पौलुस ने पवित्र बाइबल में लिखे थे आज वे हमारे लिये कितने सच हैं। वह लिखकर कहता है:

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि लिखा है, कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करुंगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूंगा।

कहां रहा ज्ञानवान ? कहां रहा शास्त्री ? कहां इस संसार का विवादी ? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया ? क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे। यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में है। परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण और अन्यजातियों के निकट मूर्खता है। परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या यहूदी, क्या यूनानी, उन के निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है। क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है ; और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।" (१ कुरिन्थियों १:१८-२५)।

मित्रो, आज आपने परमेश्वर के सुसमाचार को सुना है। आज आपने मसीह के क्रूस की कथा को सुना है। आप इस सम्बन्ध में क्या करने जा रहे हैं ? क्या आप क्रूस की कथा के इस सुसमाचार को सुनकर अन्य बहुत से लोगों की तरह इसे एक मूर्खता की बात समझकर टाल देंगे ? या क्या इन बातों के ऊपर आप पूरी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे ? परमेश्वर आज आपका आपके सब पापों से उद्धार करना चाहता है। परन्तु उसके क्रूस की कथा का आपके जीवन में आज क्या स्थान है? क्या वह आपके निकट एक मूर्खता की बात है, या क्या उसके भीतर आपको परमेश्वर के उद्धार की सामर्थ नज़र आती है ? मेरी आशा है कि इन सब बातों के ऊपर आप बड़ी ही सन्जीदगी के साथ विचार करेंगे। और यदि आप मसीह यीशु में अपने सारे मन से विश्वास करते हैं और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर परमेश्वर की इच्छानुसार चलनेवाले नए जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं। तो मुझे लिखकर इस विषय में सूचित करें।

परमेश्वर आप को अपनी बातों को समझने और उन पर चलने के लिये समझ दे।

स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में स्वर्ग का एक बड़ा ही विशेष स्थान है। प्रत्येक मनुष्य की इच्छा है कि वह स्वर्ग में प्रवेश करे। जब किसी मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तो उसके सम्बन्धी कहते हैं कि वे स्वर्ग सिधार गए। परन्तु इस बात क्या प्रमाण है कि वह व्यक्ति वास्तव में स्वर्ग में ही गया है ? इस में कोई संदेह नहीं, कि यदि किसी छोटे बालक की मृत्यु हो जाती है तो वह स्वर्ग में जाता है, क्योंकि उस में कोई पाप नहीं है; उसने कभी कोई पाप नहीं किया। प्रभु यीशु ने एक बार बालकों के सम्बन्ध में अपने चेलों को शिक्षा देकर कहा था कि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। (मत्ती १९:१४)। और प्रभु ने उन से कहा था, कि यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। (मत्ती १८:३)। सो इस से हम सीखते हैं, कि छोटे बालकों में कोई पाप नहीं है, और यदि उन में से कोई मर भी जाए तो हम जानते हैं कि वह स्वर्ग में जाएगा। सो छोटे बच्चों के उद्धार की चिन्ता मत कीजिये, क्योंकि उन्हें उद्धार की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि प्रभु के वचनानुसार वे सुरक्षित हैं। परन्तु क्या आप सुरक्षित हैं ? क्या आप जानते हैं कि अपनी मृत्यु के बाद आप स्वर्ग में जाएंगे ?

अनेक लोगों का आज ऐसा विचार है कि स्वर्ग में जाने के लिये मनुष्य को केवल धार्मिक होने की आवश्यकता है। अर्थात् कोई मनुष्य धार्मिक दृष्टिकोण से चाहे कुछ भी करे और चाहे कुछ भी माने अन्त में वह स्वर्ग में ही जाएगा। वे कहते हैं, कि जगत में मार्ग तो बहुत से हैं परन्तु उन सब मार्गों की

अन्तिम मन्जिल एक ही है, अर्थात् सारे मार्ग इन्सान को स्वर्ग में ही ले जाते हैं। दूसरी ओर, कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका ऐसा विचार है, कि परमेश्वर तो प्रेम है और इस कारण वह किसी को भी नरक में जाने नहीं देगा, परन्तु वह सब को, चाहे कोई भी क्यों न हो, अपने स्वर्ग में स्वीकार करेगा परन्तु मित्रो, अब मैं आप को यह बताना चाहता हूं कि इस सम्बन्ध में बाइबल हमें क्या सिखाती है, अर्थात् बाइबल की शिक्षानुसार स्वर्ग में कौन प्रवेश करेगा।

बाइबल के नए नियम में एक स्थान पर हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है ? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है ? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उस का शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती और किधर को जाती है ? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" (यूहन्ना ३:१-८)।

नीकुदेमुस उन लोगों में से था जो यीशु से बैर रखते थे, जो उसे क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे। परन्तु नीकुदेमुस ने यीशु के सामर्थ–पूर्ण कामों को देखकर उस पर विश्वास किया था। उस ने यीशु के सामने आकर इस बात का अंगीकार किया कि वह वास्तव में परमेश्वर की ओर से आया है। परन्तु यीशु के पास

एक संदेश था। वह स्वर्ग से पृथ्वी पर मनुष्य को एक विशेष संदेश देने आया था। पृथ्वी पर उस ने जितने भी सामर्थ के काम किए और जितने भी उपदेश दिये उन सब का एक मूल उद्देश्य यही था कि उन के कारण प्रत्येक मनुष्य उस के ऊपर विश्वास लाए, कि वह परमेश्वर की ओर से आया है; और वह परमेश्वर है। यीशु पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के लिये स्वर्ग से उद्धार का संदेश लेकर आया था; वह जगत में प्रत्येक मनुष्य के लिये यह संदेश लेकर आया था कि हर एक मनुष्य फिर से परमेश्वर के साथ मेल करके उसके स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है। यीशु जानता था कि नीकुदेमुस एक धार्मिक मनुष्य है; वह जानता था कि नीकुदेमुस यहूदी धर्म को माननेवाले लोगों का एक अगुआ है। परन्तु यीशु ने उस से कहा कि यदि तू स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है तो अवश्य है कि तू नए सिरे से जन्म ले। यीशु ने उस से कहा, कि यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। परन्तु नीकुदेमुस यीशु की बात को न समझा। उस ने सोचा कि यीशु उस से कदाचित फिर से शारीरिक जन्म लेने को कह रहा है। किन्तु यीशु ने फिर उस से कहा, कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

मित्रो, यदि वास्तव में यीशु परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया था। यदि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। और यदि वास्तव में, जैसे कि बाइबल हमें बताती है, वह प्रत्येक मनुष्य के पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था। तो यीशु के ये शब्द, कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे; जब तक कोई मनुष्य नए सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता, हम में से हर एक के लिये आज बड़े ही महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि यदि हम स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेंगे तो हम अवश्य ही नरक में प्रवेश करेंगे। क्योंकि मृत्यु के बाद प्रत्येक मनुष्य इन्हीं दो स्थानों में से किसी एक में प्रवेश करेगा। परन्तु यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर इसीलिये आया था कि वह प्रत्येक मनुष्य को स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनाए। मनुष्य को स्वर्ग में प्रवेश करने से केवल एक ही वस्तु रोकती है, और वह वस्तु है पाप। यदि मनुष्य अपने पाप से छुटकारा प्राप्त कर ले तो वह अवश्य ही स्वर्ग में प्रवेश करेगा। और बाइबल

हमें बताती है, कि यीशु क्रूस के ऊपर परमेश्वर की इच्छा से इसीलिये मारा गया था, ताकि हमारे पापों का दन्ड अपने ऊपर लेकर वह हमें पाप से मुक्त कर दे। (१ पतरस २:२४)। परन्तु जब यीशु क्रूस के ऊपर मर गया था, तो बाइबल बताती है कि कुछ लोगों ने उसे क्रूस के ऊपर से उतार कर एक कब्र के भीतर गाड़ दिया था। लेकिन जिस प्रकार यीशु ने अपनी मृत्यु से पहिले कहा था, तीन दिन के बाद वह परमेश्वर की सामर्थ से फिर जी उठा था। और बाइबल कहती है कि इस घटना के बाद वह चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा और फिर वह वापस स्वर्ग पर उठा लिया गया था। किन्तु स्वर्ग पर वापस जाने से पहिले यीशु ने अपने चेलों को यह आज्ञा दी थी, कि तुम सारे जगत में जाकर सृष्टि के सारे लोगों को मुक्ति का यह सुसमाचार सुनाओ, और जो विश्वास करे उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, क्योंकि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मत्ती २८:१८-२०; मरकुस १६:१५-१६)।

अपने पापों से उद्धार प्राप्त करना ही वास्तव में नया जन्म प्राप्त करना है। क्योंकि जब मनुष्य को पाप से छुटकारा मिल जाता है तो वह एक नया इन्सान बन जाता है। परन्तु उद्धार प्राप्त करने के लिये, यीशु ने कहा था कि, मनुष्य को उसमें विश्वास लाना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है। बपतिस्मा लेने का अर्थ है जल के भीतर गाड़े जाना। बाइबल में प्रेरित पौलुस इस सम्बन्ध में एक जगह यूं कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जिनतों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मुर्दों में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६:३-४)। इसी प्रकार हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि जब फिलिप्पुस ने खोजे को यीशु का सुसमाचार सुनाया था और उसने सुनकर विश्वास किया और फिलिप्पुस से कहा कि अब मुझे बपतिस्मा दे। तो लिखा है कि वे दोनों जल में उतर पड़े और उसने खोजे को बपतिस्मा दिया,

अर्थात् जल के भीतर गाड़ा। (प्रेरितों ८:३५-३९)। इस बात पर भी ध्यान दें, कि अभी हमने पवित्र बाइबल में से यह पढ़ा था कि बपतिस्मा लेने के बाद मनुष्य नया बन जाता है अर्थात् वह नए जीवन की चाल चलने लगता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उस में कोई आश्चर्य-जनक परिवर्तन आ जाता है। परन्तु क्योंकि वह मनुष्य जानता है कि यीशु मेरे पापों से मेरा उद्धार करने के लिये मेरे स्थान पर मर गया था, और मैं जल के भीतर गाड़े जाकर उसकी मृत्यु का बपतिस्मा ले रहा हूं और जल में से बाहर आकर मैं एक नए जीवन का आरम्भ करने जा रहा हूं, सो इस प्रकार यीशु की आज्ञा को मानकर वह एक नए जीवन में प्रवेश करता है।

परन्तु फिर एक अन्य स्थान पर बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं कि यीशु ने उपदेश देकर एक जगह यूं कहा था, कि, "आत्मा तो जीवन-दायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।" (यूहन्ना ६:६३)।

सो इन सब बातों को ध्यान में रखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, जैसे कि यीशु ने कहा कि जो बातें मैने तुम से कहीं वे आत्मा हैं, सो जब हम उसकी अर्थात् आत्मा की बात मानकर जल के भीतर उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेते हैं तो इस प्रकार हमारा नया जन्म होता है अर्थात् इस तरह से प्रभु के आत्मिक वचन की आज्ञा मानकर हम नए सिरे से जन्म लेते हैं। (१ कुरिन्थियों १२:१३)। इसलिये बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं "क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।" (१ पतरस १:२३)।

मित्रो, क्या आप ने प्रभु की आज्ञा को मानकर नया जन्म पाया है ? यह बड़ा ही आवश्यक है। क्योंकि "यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो" प्रभु कहता है कि वह मनुष्य "परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

*

स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है

मित्रो :

आज फिर से हम आपके साथ बाइबल के एक बड़े ही महत्वपूर्ण पाठ के ऊपर विचार करने जा रहे हैं। और मेरी आशा है कि आप सब बड़े ही ध्यान से इन बातों को सुनेंगे। आप कदाचित किसी अलग धर्म या विश्वास के हो सकते हैं, परन्तु जिस विषय पर आज हम विचार करने जा रहे हैं वह एक ऐसा विषय है जिस पर हम सब सहमत हैं। क्योंकि हम सब का चाहे हम किसी भी धर्म या विश्वास के क्यों न हों, यह विश्वास है कि स्वर्ग है। स्वर्ग के बारे में लोगों के विचार अलग-अलग हो सकते हैं परन्तु स्वर्ग के अस्तित्व पर लगभग सभी लोग सहमत है। कुछ लोगों का विचार है कि स्वर्ग और नरक मनुष्य को इसी जगत में और इसी जीवन में प्राप्त हो जाता है। अर्थात वे अपने कर्मों के फल को स्वर्ग और नरक मानते हैं। फिर कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि स्वर्ग एक आनन्द भोगने का स्थान है, जहां मनुष्य को आनन्द ही आनन्द मिलेगा। परन्तु आज हम अपने पाठ में इस बात पर विचार करने जा रहे हैं कि स्वर्ग के बारे में बाइबल में हमें क्या शिक्षा मिलती है। क्योंकि इस के कुछ फ़र्क नहीं पड़ता कि मनुष्य स्वर्ग के विषय में क्या सोचता और क्या कहता है। लेकिन यह जानना बड़ा ही ज़रुरी है कि बाइबल हमें स्वर्ग के बारे में क्या बताती है। क्योंकि बाइबल परमेश्वर का वचन है। इस पुस्तक में जो कुछ भी लिखा हुआ है वह सब परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। सो आईए, देखें कि बाइबल हमें स्वर्ग के बारे में क्या शिक्षा देती है।

सबसे पहिली बात जो स्वर्ग के विषय में बाइबल में हम देखते हैं वह यह है, कि स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है जहां परमेश्वर रहता है। जो लोग ऐसा सोचते हैं कि स्वर्ग मनुष्य को इस पृथ्वी पर ही मिल जाता है। उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि पवित्र बाइबल हमें यह सिखाती है कि स्वर्ग इस पृथ्वी पर नहीं है, परन्तु स्वर्ग वहां है जहां परमेश्वर है, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है। प्रभु यीशु ने शिक्षा देकर एक बार इस प्रकार कहा था, कि "तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा ? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवार पर रखते है, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" (मत्ती ५:१३-१६)।

सो स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है, जहां हमारा आत्मिक पिता अर्थात परमेश्वर रहता है। और क्योंकि परमेश्वर पवित्र है इसलिये स्वर्ग भी एक पवित्र स्थान है। इस कारण बाइबल में हम पढ़ते हैं कि स्वर्ग में कोई भी अपवित्र वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती। एक जगह इस प्रकार लिखा है, "क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (१ कुरिन्थियों ६:९,१०)। और इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर परमेश्वर की पुस्तक में हम यूं पढ़ते हैं, "शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्ति-पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के ऐसे और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं, जैसा

पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" (गलतियों ५:१९-२१)।

यहां हम इस बात को भी देखते हैं कि स्वर्ग को परमेश्वर का राज्य कहकर सम्बोधित किया गया है। अर्थात् स्वर्ग परमेश्वर का राज्य है, जहां वह अपने लोगों के ऊपर राज्य करता है। आज पृथ्वी पर कुछ लोगों का ऐसा मत है कि स्वर्ग में प्रवेश करने से पहिले मनुष्य को कई बार मरना होगा और कई बार जन्म लेना होगा। अर्थात् जब तक मनुष्य अपने भले कामों तथा प्रयत्नों द्वारा सिद्ध नहीं बन जाता वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता। और जब तक वह स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य अपने आप को नहीं बना लेता, उसे पृथ्वी पर बार-बार किसी न किसी रुप में जन्म लेना पड़ेगा।

परन्तु, इसके विपरीत, परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में हमें यह शिक्षा मिलती है कि परमेश्वर की ओर से प्रत्येक मनुष्य के लिये केवल एक बार मरना और फिर न्याय का होना निश्चित है। (इब्रानियों ९:२७)। यानि प्रत्येक मनुष्य केवल एक बार जन्म लेता है। परमेश्वर ने यह जीवन आपको दिया है। और उसने यह निश्चित किया है कि एक दिन आप अपनी देह से अलग होकर उस हमेशा के अनन्तकाल में प्रवेश करें जहां से कभी कोई वापस नहीं आता। आप चाहे तो उसकी इच्छा पर चलकर अपने जीवन को हमेशा के लिये बचा सकते हैं, या उसकी इच्छा के विरोध में चलकर हमेशा के लिये अपने जीवन को खो सकते हैं। परन्तु परमेश्वर प्रेम है। अर्थात् यद्यपि वह पाप से घृणा करता है किन्तु वह जगत में प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है। उसकी इच्छा यह कदापि नहीं है कि मनुष्य अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये बार-बार इस पृथ्वी पर जन्म ले और दुख उठाए, और हज़ारों वर्षों के बाद, कई जन्मों के उपरान्त, अपने पापों का दन्ड भरके स्वर्ग में प्रवेश करे। और वास्तव में बात तो यह है कि यदि परमेश्वर की यही इच्छा होती तो जगत में कभी भी कोई ऐसा मनुष्य नहीं होता जो परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन पाता ! क्योंकि न कभी इस पृथ्वी पर कोई ऐसा मनुष्य हुआ है और न है जिस

से कभी कोई पाप न हुआ हो। और यह बात हमें और भी अधिक सच्ची प्रतीत होती है जब हम पाप को मनुष्य की दृष्टि से न देखकर परमेश्वर की दृष्टि से देखते है। क्योंकि मनुष्य पाप उसे कहता है जिसे वह अपनी आंखों से देखता है। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में पाप वह है जो मनुष्य के मन के भीतर उत्पन्न होता है, जिसे दूसरा मनुष्य अपनी आंखों से नहीं देख सकता परन्तु केवल परमेश्वर देख सकता है। (मरकुस ७:१९-२३)। प्रभु यीशु ने एक जगह शिक्षा देकर कहा था, कि क्रोध करना हत्या करने के समान है और कुदृष्टि डालना व्यभिचार करने के समान है। (मत्ती ५:२१,२२,२७,२८)। इसलिये यह एक सच्चाई है कि चाहे मनुष्य कितने भी जन्म क्यों न ले ले वह कभी भी परमेश्वर के समान एक पाप रहित जीवन व्यतीत नहीं कर सकता।

इसलिये यदि मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश करेगा तो वह केवल परमेश्वर की दया और उसके अनुग्रह से ही प्रवेश करेगा। और इसी मुख्य संदेश को मनुष्य को देने के लिये परमेश्वर ने अपने पवित्रात्मा की प्रेरणा के द्वारा बाइबल को लिखवाया है। क्योंकि बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते है, "इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे। वरन इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो; कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो।" (रोमियों ३:२३-२६)। सो जबकि मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा अपने आप को धर्मी ठहराकर स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य नहीं बना सकता। हम देखते हैं कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया। बाइबल हमें बताती है कि यीशु मसीह में होकर परमेश्वर स्वयं जगत में आ गया। उसने अपने जीवन और शिक्षा के द्वारा मनुष्यों को परमेश्वर के मार्ग पर चलना सिखाया। और फिर उसने सारे जगत के लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपने आप को एक क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया।

इसलिये आज हम यीशु के द्वारा धर्मी ठहर सकते हैं। क्योंकि वह हमारे स्थान पर हमारे पापों के लिये क्रूस के ऊपर परमेश्वर की इच्छा से मारा गया था। किन्तु यह कैसे हो सकता है ? बाइबल में परमेश्वर हम से कहता है, कि जब हम यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाते हैं, और अपने सारे पापों से अपना मन फिराते हैं, और जब हम अपने पापों की क्षमा के लिये जल में बपतिस्मा लेकर यीशु की मृत्यु और उसके गाड़े जाने और उसके जी उठने की समानता को पहिन लेते हैं तो परमेश्वर यीशु के बलिदान के कारण हमारे सब पापों को क्षमा कर देता है। (रोमियों ६:३-५; गलतियों ३:२७; मरकुस १६:१६ ; प्रेरितों २:३८)। इस प्रकार परमेश्वर की आज्ञा को मानने के द्वारा बाइबल कहती है कि हमारा एक नया जन्म होता है, अर्थात् हम पुराने जीवन को छोड़कर एक नए जीवन का आरम्भ करते हैं, जिसमें हम यीशु द्वारा बताए परमेश्वर के मार्ग पर चलते हैं। और फिर एक दिन जब हम परमेश्वर के ठहराए नियम अनुसार पृथ्वी पर इस देह को छोड़कर अनन्तकाल में प्रवेश करेंगे तो हम परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में जाएंगे, जहां हम हमेशा उसके साथ रहेंगे, जहां वह हमारा पिता होगा और हम उसके सन्तान होंगे। (प्रकाशितवाक्य १४:१३; यूहन्ना १४:१-३; १ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८)।

मित्रो, स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है, जहां परमेश्वर की इच्छा पर चलनेवाले उसके लोग हमेशा उसके साथ रहेंगे ; जहां वे युगानुयुग उसकी प्रशंसा और बड़ाई करेंगे ; और जहां परमेश्वर उनका पिता होगा और वे सब उसकी संतान होंगे। (प्रकाशितवाक्य २१:१-७)।

परन्तु क्या आप परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये तैयार हैं ? क्या आप ने उसकी आज्ञा को मानकर उस धार्मिकता को पहिन लिया है जिसे वह हमें यीशु में देता है ?

*

नरक उतना ही वास्तविक है जितना कि स्वर्ग है।

यदि आप से मैं यह प्रश्न पूछूं, कि स्वर्ग के बारे में आप की क्या धारणा या क्या विश्वास है ? तो कदाचित आप उत्तर देकर कहेंगे कि स्वर्ग एक ऐसा स्थान हैं जहां मनुष्य की आत्मा परमात्मा में लोप हो जाती है। क्योंकि आज पृथ्वी पर अनेक लोगों का ऐसा ही विश्वास है। उन की धारणा यह है कि मनुष्य मरने के बाद फिर से जन्म लेता है, और जब तक वह अपने अच्छे कर्मों के द्वारा धर्मी और सिद्ध नहीं बन जाता, वह इसी प्रकार मरता और जन्म लेता रहता है। परन्तु जब किसी जीवन में वह अच्छे कर्म कर लेता है तो वह स्वर्ग में चला जाता है, अर्थात् उसका आत्मा परमेश्वर यानि परमात्मा में जाकर लोप हो जाता है। जिस का अर्थ यह है कि उसका अपना व्यक्तिगत व्यक्तित्व समाप्त हो जाता है। दूसरी ओर, जब हम बाइबल को पढ़ते हैं तो परमेश्वर इस पुसत्क में इस सम्बन्ध में हमें कुछ और ही शिक्षा देता है।-सबसे पहिली बात तो बाइबल हमें यह बताती है, कि एक बार जन्म लेने और मरने के बाद मनुष्य फिर दोबारा इस संसार में जन्म नहीं लेता है। (इब्रानियों ९:२७)। और दूसरी बात बाइबल हमें यह सिखाती है, कि परमेश्वर की दृष्टि में जगत में सारे लोग पापी हैं (रोमियों ३:१०,२३), और कोई भी मनुष्य ऐसा कोई काम नहीं कर सकता जिसे करके वह अपने पापों का प्रायश्चित कर ले और धर्मी बन जाए, परन्तु प्रत्येक मनुष्य का उसके पापों से उद्धार केवल परमेश्वर के अनुग्रह से होता है। (इफिसियों २:८,९)। और फिर बाइबल हमें यह भी बताती है कि मनुष्यों का उद्धार

करनेवाला परमेश्वर का अनुग्रह जगत में सब मनुष्यों पर प्रगट हुआ है। क्योंकि पाप से मनुष्य का उद्धार करने के लिये परमेश्वर स्वयं यीशु मसीह में होकर इस जगत में आ गया था। (यूहन्ना १:१,२; ३:१६)। और यीशु जगत में प्रत्येक मनुष्य के पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था, अर्थात् उसने अपनी मृत्यु के द्वारा पृथ्वी पर सब लोगों के पापों का प्रायश्चित कर दिया है। (रोमियों ५:८; १ यूहन्ना १:१,२)। और इस कारण जब कोई भी मनुष्य यीशु के बारे में सुनकर उस में विश्वास लाता है और उसकी आज्ञा को मानता है तो परमेश्वर के अनुग्रह से उस मनुष्य का उद्धार होता है। (इब्रानियों ५:८,९)।

फिर, तीसरे स्थान पर बाइबल हमें यह सिखाती है, कि जो मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास लाने और उसकी आज्ञा मानने के द्वारा अपने पापों से उद्धार पा चुका है उसके पास यह आशा है कि अपनी मृत्यु के बाद वह परमेश्वर के पास स्वर्ग में जाएगा। (रोमियों ८:१; प्रकाशितवाक्य १४:१३)। किन्तु बाइबल हमें यह नहीं सिखाती कि स्वर्ग में मनुष्य का आत्मा परमेश्वर अर्थात् परमात्मा में मिलकर खो जाता या लोप हो जाता है। परन्तु इसके विपरीत बाइबल हमें सिखाती है कि स्वर्ग में प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत रुप से परमेश्वर की महिमा तथा प्रंशसा करता है। और परमेश्वर के साथ उसकी संतान की नाईं रहता है। बाइबल में एक स्थान पर लिखा है कि "वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा, और उनका परमेश्वर होगा। और वह उन की आंखो से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी।" परन्तु, "जो जय पाए" परमेश्वर कहता है, "वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मै उस का परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। पर डरपोकों, और अविश्वासियों और घिनौनों और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों और मूर्त्तीपूजकों, और सब झुठों का भाग उस झील

में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।" (प्रकाशितवाक्य २१:३,४,७-८)।

सो जबकि एक ओर बाइबल हमें स्वर्ग में जाने का सुसमाचार देती है। दूसरी और परमेश्वर के वचन की पुस्तक हमें यह चेतावनी देती है, कि जो लोग यीशु मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार नहीं करते और उसमें होकर अपने पापों से धर्मी ठहराए जाकर स्वर्ग में प्रवेश नहीं करते, वे सब उस झील में जाएंगे जो आग और गन्धक से जलती रहती है और बाइबल कहती है, कि यह दूसरी मृत्यु है। अकसर हम स्वर्ग के बारे में बातें करना चाहते है, हम स्वर्ग की सुंदरता और महानता के बारे में जानना चाहते हैं। परन्तु नरक के बारे में हम कुछ भी सुनना नहीं चाहते क्योंकि हम जानते हैं कि नरक एक भयानक स्थान है। परन्तु परमेश्वर की जो बाइबल हमें स्वर्ग की सुंदरता के विषय में बताती है वही बाइबल हमें नरक की भयंकरता के बारे में भी बताती है। जो बाइबल हमें बताती है कि स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है वही बाइबल हमें बताती है कि नरक भी एक वास्तविक स्थान है। वह एक ऐसी झील है जो आग और गन्धक से जलती रहती है, जो कभी बुझती नहीं, और बाइबल कहती है, कि यह दूसरी मृत्यु है। क्यों ? क्योंकि प्रत्येक मनुष्य इस जगत में अपने पापों के कारण आत्मिक दृष्टिकोण के मरा हुआ है, अर्थात् वह परमेश्वर से अलग है। अलग होना ही मृत्यु का वास्तविक अर्थ है, जैसे कि जब आत्मा शरीर से अलग होती है तो शरीर मर जाता है। ऐसे ही क्योंकि मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से अलग है इसलिये वह मरा हुआ है। परन्तु तौभी इस जीवन में प्रत्येक मनुष्य के पास यह अवसर है कि वह यीशु मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह से अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके उसके साथ अपना मेल कर ले। किन्तु यदि मनुष्य परमेश्वर के इस वरदान को ठुकरा देता है और पृथ्वी पर अपने जीवन की समाप्ति पर इस जगत से चला जाता है, तो वह हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग हो जाता है।

कारण है कि नरक को सम्बोधित करके बाइबल कहती है, कि यह दूसरी मृत्यु है।

जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था तो प्रभु ने एक जगह यूं कहा था, कि अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे और धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५:४६)। अर्थात् जिस प्रकार स्वर्ग एक अनन्त स्थान है, उसी प्रकार नरक भी एक अनन्त स्थान है। जैसे कि धर्मी अनन्तकाल तक परमेश्वर के साथ रहेंगे वैसे ही अधर्मी अनन्तकाल तक नरक में रहेंगे। परन्तु अनन्तकाल का अर्थ क्या है ? अनन्तकाल का अर्थ है, जो कभी समाप्त न होगा। अनन्तकाल का अनुमान समय तथा गिनती से नहीं लगाया जा सकता। क्योंकि अनन्तकाल सदा रहेगा वह कभी खत्म नहीं होगा। और बाइबल कहती है कि अर्धमी नरक में अनन्त दन्ड भोगेंगे, वहां हमेशा के लिये वे उस झील में रहेंगे जो सदा आग और गन्धक से जलती रहती है। और फिर एक और जगह बाइबल यूं कहती है कि नरक एक ऐसा स्थान है जहां अंधकार है और जहां रोना और दांत पीसना होगा। (मत्ती २५:३०)। अकसर हम अंधेरे से डरते हैं, हम अंधकार में कहीं जाना नहीं चाहते। परन्तु नरक हमेशा का अन्धकार है। किन्तु नरक अंधकार क्यों है? क्योंकि वहां परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर ज्योति है, और वह स्वर्ग में है। अकसर पृथ्वी पर हम ऐसे लोगों से डरते हैं जो अपराधी और चरित्रहीन होते हैं, हम उन की संगति नहीं करना चाहते, हम उन से दूर रहते हैं। परन्तु नरक ऐसा स्थान है जहां हम में से बहुतेरों को ऐसे ही लोगों के साथ और हमेशा तक रहना पड़ेगा ! क्योंकि बाइबल कहती है कि "डरपोंको, और अविश्वासियों और घिनौनों और हत्यारों और व्यभिचारियों और टोन्हों और मूर्तीपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है; यह दूसरी मृत्यु है।" (प्रकाशितवाक्य २१:८)। किन्तु शायद आप कहें, कि मैं इन में से कोई भी काम नहीं करता। परन्तु बाइबल कहती है, कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का

बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६:२३)। और, "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों ३:२३)। अर्थात् परमेश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य पापी हैं और पाप के कारण सभी नरक की उस झील में जाएंगे जो दूसरी मृत्यु है। परन्तु यीशु मसीह में परमेश्वर हमें अनन्त जीवन का वरदान देना चाहता है। वह हम सब को नरक में जाने से बचाना चाहता हैं। वह यीशु मसीह के द्वारा सब से अपना मेल करना चाहता है। इसलिये यदि कोई नरक में जाएगा तो इसलिये नहीं कि परमेश्वर उसे वहां भेज रहा है, परन्तु वह अपनी इच्छा से वहां जाएगा। बाइबल कहती है कि परमेश्वर नही चाहता कि कोई भी नरक में नाश हो, परन्तु वह सब का उद्धार करना चाहता है। (२ पतरस ३:९)। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)।

यीशु को परमेश्वर ने स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था वह उसकी इच्छा से मनुष्यों के हाथों क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया था, ताकि वह प्रत्येक मनुष्य के लिये क्रूस पर मृत्यु का स्वाद चखे। (इब्रानियों २:९)। क्रूस पर यीशु का बलिदान करके उसे परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया है। (१ यूहन्ना ४:१०)। और बाइबल कहती है, कि परमेश्वर का यह कार्य जगत में सारे लोगों के लिये एक सुसमाचार है। (रोमियों १:१६-१७)। प्रभु यीशु ने स्वयं अपने चेलों को यह आज्ञा देकर भेजा था, कि "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" और उस ने कहा था, कि, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६:१५-१६)।

मित्रो, परमेश्वर का सुसमाचार बड़ा ही सरल है, परन्तु वह बड़ा सामर्थी है। बाइबल में लिखा है, कि, "क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट

मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (१ कुरिन्थियों १:१८)। सो मेरी आशा है, कि इस से पहिले कि पृथ्वी पर आप का यह वर्तमान जीवन समाप्त हो जाए आप परमेश्वर के सुसमाचार को मानकर उसके साथ अपना मेल कर लेंगे। और यदि आप ऐसा करेंगे तो निश्चय ही उस के स्वर्ग में प्रवेश करके आप अनन्त जीवन पाएंगे। क्योंकि इस बात का आश्वासन परमेश्वर ने स्वयं हमें अपने वचन में दिया है। और हम जानते हैं कि वह सच्चा परमेश्वर है।

प्रभु आप को अपने पास आने के लिये ताकत दे।

मृत्यु के बाद न्याय निश्चित है

अकसर हमारे मन में यह विचार आता है, कि मनुष्य की मृत्यु के बाद क्या होगा ? परमेश्वर के वचन पवित्र बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं, कि, "मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों ९:२७)। सो बाइबल से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि मृत्यु के बाद प्रत्येक मनुष्य का न्याय होगा। इसी सम्बन्ध में बाइबल एक अन्य स्थान पर इस प्रकार कहती है, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२ कुरिन्थियों ५:१०)। और फिर लिखा है कि "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०,३१)। सो हम देखते हैं कि बाइबल हमें यह शिक्षा देती है कि परमेश्वर ने सब मनुष्यों के लिये न्याय का एक दिन ठहराया है। उस दिन वह प्रभु यीशु के द्वारा सारे जगत का न्याय करेगा। और प्रत्येक मनुष्य का न्याय उसके कामों के अनुसार किया जाएगा।

जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था जो "न्याय" उसकी शिक्षा का एक बड़ा ही मुख्य विषय था। यद्यपि उस ने कहा कि वह जगत का उद्धार करने के लिये पृथ्वी पर आया है, परन्तु इस से भी अधिक उस ने इस बात की शिक्षा और चेतावनी दी थी कि भविष्य में न्याय का एक दिन आनेवाला है। जब हम प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं को उसके नए नियम में पढ़ते हैं, तो हम इस बात को

देखते हैं कि बार-बार उपदेश और दृष्टान्तों के द्वारा यीशु ने न्याय के दिन के बारे में लोगों को बताया था। और आज हम बाइबल में से मत्ती की पुस्तक के पच्चीसवें अध्याय में से पढ़ेंगे। यहां हम देखते हैं कि इस सम्पूर्ण अध्याय में प्रभु यीशु ने न्याय के सम्बन्ध में तीन बड़ी ही आवश्यक बातों का वर्णन किया है। अर्थात् सबसे पहिले तो यह कि न्याय का दिन अचानक आ जाएगा; और दूसरे यह, कि हर एक मनुष्य का न्याय इस बात से होगा कि परमेश्वर ने उसे यह जो जीवन दिया है उसके साथ वह क्या कर रहा है; और तीसरी आवश्यक बात यीशु ने अपने इस उपदेश से यह सिखाई थी कि जो कुछ हम पृथ्वी पर मनुष्यों के साथ करते हैं, वह हम उसके साथ करते हैं; और जो कुछ हम पृथ्वी पर मनुष्यों के साथ नहीं करते, वह हम उसके साथ नहीं करते। इसलिये यदि हम भलाई करते हैं तो हमें भलाई का फल मिलेगा और यदि हम बुराई करते हैं तो हमें अपनी बुराई का दन्ड मिलेगा। सो आईए, अब हम यीशु के इस उपदेश को बाइबल में से पढ़ें और ध्यान से प्रभु की इन बातों को सुनें जो उसने सब मनुष्यों के न्याय के सम्बन्ध में कहीं थीं।

सबसे पहिले यीशु ने उस समय के एक ब्याह को चित्रित करके दृष्टान्त देकर कहा था, कि, "तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूलहे से भेंट करने को निकलीं। उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं। मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। जब दूलहे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं, और सो गईं। आधी रात को धूम मची, की देखो, दूलहा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिये चलो। तब वे सब कुवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। और मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया, कि कदाचित हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो ; भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो। जब वे मोल लेने जा रही थीं, तो दूलह आ पहुंचा और जो तैयार थीं, वे उसके

साथ ब्याह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया। इसके बाद वे दूसरी कुंवरियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे। उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता। इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को।" मित्रो, जगत में कोई ऐसा मनुष्य नहीं है जिसे इस बात का ज्ञान हो कि प्रभु किस दिन जगत का न्याय करने के लिये स्वर्ग से प्रगट होगा। लेकिन प्रभु यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें यह चेतावनी दी है कि यह देखते हुए कि प्रभु के न्याय का दिन किसी भी समय आ जाएगा, हमें हमेशा तैयार और सचेत रहना चाहिए। किन्तु फिर यीशु ने एक और दृष्टान्त देकर आगे इस प्रकार कहा थाः

"क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिस ने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर, अपनी सम्पत्ति उन को सौंप दी। उस ने एक को पांच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक, अर्थात् हर एक को उसकी सामर्थ के अनुसार दिया, और तब परदेश चला गया। तब जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने तुरन्त जाकर उन से लेनदेन किया, और पांच तोड़े और कमाए। इसी रीति से जिस को दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए। परन्तु जिस को एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी के रुपए छिपा दिए बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा। जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं। उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य है अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वसयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनांऊगाः अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। और जिसको दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा ; हे स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख, मैंने दो तोड़े और कमाए हैं। उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। तब जिस को एक तोड़ा मिला था, उसने आकर कहा ; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था कि तू कठोर मनुष्य हैः तू जहां कहीं नहीं बोता कहां काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां से बटोरता है। सो मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा

मिट्टी में छिपा दिया; देख, जो तेरा है, वह यह है। उस के स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास ; जब यह तू जानता था, कि जहां मै ने नहीं बोया वहां से काटता हूं ; और जहां मै ने नहीं छींटा वहां से बटोरता हूं। तो तुझे चाहिए था, कि मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेट ले लेता। इसलिये वह तोड़ा उस से ले लो, और जिस के पास दस तोड़े हैं उस को दे दो। क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिय जाएगाः परन्तु जिस के पास नहीं हैं, उस से वह भी जो उस के पास है, ले लिय जाएगा। और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना औ दांत पीसना होगा।" मित्रो, न्याय का दिन निश्चित है। परन्तु जिन वस्तुओं को परमेश्वर ने आप को दिया है उन के साथ आज आप क्या कर रहे हैं ? उसकी दी हुई आशीषों का आप क्या कर रहे हैं ? उसके दिए हुए समय का आप क्या कर रहे हैं ? जब वह लेखा लेने के लिये आएगा तो आप उसको क्या उत्तर देंगे ? क्या आप तैयार हैं ? परन्तु अब इस के आगे देखिए, कि इस सम्बन्ध में प्रभु ने और क्या कहा था। उसने कहा था :

"जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियां उसके सामने इकट्ठी की जाएंगी ; और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा, और वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं पियासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए, मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझसे मिलने आए। तब धर्मी उस को उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाय ? या पियासा देखा और पिलाया ?

हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा और कपड़े पहिनाए ? हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए ? तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे छोटे से छोटे भाईयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे साथ किया। तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे स्त्रापित लोगो मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं पियासा था और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। मैं परदेशी था और तुम ने मुझे अपने घर नहीं ठहराया ; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए ; बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली। तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा, या पियासा या परदेशी, या नंगा, या बीमार या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा-टहल न की ? तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। और ये अनन्त दन्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"

आज आप परमेश्वर के स्वरुप पर बनाए हुए मनुष्यों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह बड़ी ही महत्वपूर्ण बात है। क्योंकि प्रभु कहता है, कि जो तुम ने उन के साथ किया वह तुम ने मेरे साथ किया, और जो तुम ने उन के साथ नहीं किया वह तुम ने मेरे साथ नहीं किया। परन्तु यह सब प्रभु यीशु ने क्यों कहा ? क्यों उस ने इन तमाम बातों को बाइबल में लिखने के लिये अपने प्रेरितों को प्रेरणा दी ? इसलिये, क्योंकि इन बातों के द्वारा वह हमें चेतावनी देना चाहता है कि हम अपने आपको न्याय के दिन के लिये तैयार रखें। परन्तु मान लीजिये, यदि न्याय का वह दिन आज ही आ जाए, तो क्या आप उसके लिये तैयार हैं ? हो सकता है प्रभु के न्याय का वह दिन भविष्य में बहुत ही नज़दीक हो, क्या आप उसके लिये तैयार हैं ? यीशु ने कहा है कि उस में जो विश्वास करेगा

और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६:१६)। क्या आप ने उसकी बात को मान लिया है ? क्या आप उसकी मर्जी पर चल रहे हैं ?

मित्रो, मनुष्य का जीवन बड़ा ही छोटा है, परन्तु जिस अनन्तकाल में वह प्रवेश करने जा रहा है वह बहुत ही बड़ा है। और प्रभु यीशु के इन शब्दों को याद रखें कि उस ने कहा था, कि वहां कुछ अनन्त दन्ड भोगेंगे और कुछ अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

दोबारा अवसर नहीं मिलेगा

प्रत्येक मनुष्य के लिये ये सवाल बड़े ही महत्वपूर्ण हैं : कि मैं इस पृथ्वी पर कहां से आया ? और, इस पृथ्वी पर मेरा क्या उद्देश्य है ? और, इस पृथ्वी पर जब मेरा जीवन समाप्त हो जाएगा तो मैं यहां से कहां जाऊंगा ? यद्यपि कि आज बहुत से लोगों का विचार है कि मनुष्य का विकास कीटाणुओं और पशुओं से हुआ है। किन्तु बाइबल, जो कि परमेश्वर का वचन है, हमें यह बताती है कि आरम्भ में मनुष्य को परमेश्वर ने स्वयं बनाया था, जैसे कि उसने सृष्टि की सभी अन्य वस्तुओं की रचना की है। बाइबल में लिखा है कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को अपने आत्मिक स्वरुप पर और अपनी समानता पर बनाया था। अर्थात् परमेश्वर ने मनुष्य को आरम्भ में निष्पाप और निष्कलंक और अपने समान पवित्र बनाया था। इसी प्रकार पवित्र बाइबल हमें यह भी बताती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने अपनी महिमा तथा प्रशंसा के लिये उत्पन्न किया था। जब प्रभु यीशु इसं पृथ्वी पर था तो उस ने मनुष्य को नमक और ज्योति के समान बताया था। और प्रभु ने कहा था कि जिस प्रकार नमक वस्तुओं को स्वादिष्ट बनाता है और उन्हें सड़ने से बचाता है, और जिस तरह ज्योति लोगों को प्रकाश देती है और मार्ग दिखाती है, उसी प्रकार, प्रभु ने कहा था, कि तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके जिस से कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें। (मत्ती ५:१३-१६)। फिर परमेश्वर के वचन की पुस्तक हमें यह जानकारी देती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने हमेशा अपने साथ रहने के लिये बनाया था। परन्तु जब मनुष्य ने परमेश्वर की

इच्छानुसार चलना छोड़कर अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलना आरम्भ कर दिया, तो वह परमेश्वर के स्वरुप और उसकी समानता के स्तर से नीचे गिर गया। और इस प्रकार हमेशा परमेश्वर के साथ रहने के विपरीत वह हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग हो गया।

परन्तु क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर ने अपनी प्रंशसा के लिये बनाया था, और क्योंकि परमेश्वर को मनुष्य से बहुत प्रेम था। इस कारण पाप से मनुष्य का उद्धार करके उसे अपने पास आने का एक और अवसर देने के लिये परमेश्वर ने एक महान् योजना बनाई। अपनी उसी योजना को मनुष्यों पर प्रगट करने के लिये परमेश्वर ने कुछ लोगों को प्रेरणा देकर उनसे बाइबल को लिखवाया। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिये परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर जगत में जन्म लिया। बाइबल हमें बताती है कि, आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। वही वचन परमेश्वर की सामर्थ से मनुष्य की देह में होकर और यीशु मसीह बनकर मनुष्यों का पाप से उद्धार करने के लिये जगत में आ गया। (यूहन्ना १:१,१४; मत्ती १:१८-२१)। यीशु क्योंकि परमेश्वर था इसलिये पृथ्वी पर मनुष्य की देह में रहकर भी उस ने कभी कोई पाप नहीं किया। इसके विपरीत उसने एक पवित्र और सिद्ध जीवन व्यतीत करके सब मनुष्यों के सामने एक आदर्श रखा कि उसके जीवन के आदर्श को अपनाकर हम इस पृथ्वी पर अपना जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत कर सकते हैं। परन्तु यीशु अन्य मनुष्यों की तरह इस पृथ्वी पर रहने के लिये नहीं आया था। वह वास्तव में जगत में मरने के लिये आया था। क्योंकि परमेश्वर ने उसे जगत में इसीलिये भेजा था। यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर जगत में सारे लोगों के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था। अर्थात् यीशु को वह जगत के सारे लोगों के पापों के लिये दन्डित करना चाहता था। परमेश्वर जबकि मनुष्य से प्रेम करता है और उसके साथ फिर से अपना

मेल करना चाहता है। किन्तु मनुष्य के भीतर पाप के रहते वह उसके साथ मेल नहीं कर सकता। क्योंकि वह पवित्र, पवित्र, और पवित्र है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य के स्थान पर परमेश्वर ने यीशु को दन्ड दिया था। बाइबल में लिखा है, कि यीशु हमारे पापों को अपनी देह पर लेकर क्रूस के ऊपर चढ़ गया (१ पतरस २:२४), और जब हम पापी ही थे तभी यीशु परमेश्वर की इच्छा से हमारे लिये मर गया (रोमियों ५:८), और यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित है। (१ यूहन्ना २:२; ४:१०)। क्योंकि जो पाप से अज्ञात था, बाइबल कहती है, उसी को परमेश्वर ने हम सब के लिये पापी ठहराया ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर के सम्मुख धर्मी बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५:२१)।

मित्रो, क्या आप इन बातों को वास्तव में सुन रहे हैं ? ये वे बातें हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने वचन की पुस्तक अर्थात् बाइबल में हमारे लिये प्रगट किया है। परमेश्वर कहता है कि उसने मनुष्य को अपने आत्मिक स्वरुप पर और अपनी समानता पर बनाया था। परन्तु मनुष्य ने परमेश्वर की इच्छा पर चलकर उसकी महिमा और प्रशंसा करने के विपरीत अपने कामों से परमेश्वर का विरोध किया। और इस कारण वह परमेश्वर के साथ हमेशा के लिये रहने के विपरीत उस से हमेशा के लिये अलग हो गया। परन्तु परमेश्वर मनुष्य को अपने पास बुलाना चाहता है ; वह मनुष्य के साथ अपना मेल करना चाहता है । सो उसने मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने के लिये यीशु मसीह को बलिदान कर दिया। इसलिये आप के सामने आज एक बहुत बड़ा सवाल है, अर्थात् यह, कि आप यीशु के साथ क्या करेंगे ? उसके बारे में आप क्या निर्णय लेने जा रहे हैं, और क्या निश्चय करने जा रहे हैं ? क्या आप उसे अस्वीकार करेंगे या स्वीकार करेंगे ? मित्रो, यह प्रश्न बड़ा ही महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस प्रश्न का सम्बन्ध आपकी आत्मा के उद्धार से है। आप यीशु के साथ क्या करेंगे ? यदि आप उसे स्वीकार करने को तैयार है, तो परमेश्वर आप को स्वीकार करने

को तैयार है। परन्तु यदि आप उसे अस्वीकार करेंगे, तो आप हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग रहेंगे।

अभी हमने इस बात को देखा था कि मनुष्य को परमेश्वर ने अपने स्वरुप पर बनाया है। यानि मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है, क्योंकि परमेश्वर आत्म है। सो एक आत्मिक प्राणी होने के कारण आत्मिक दृष्टिकोण से मनुष्य सदैव विद्यमान रहेगा। अर्थात् मनुष्य के आत्मा के अस्तित्व को जगत में कोई नही मिटा सकता। मृत्यु भी नहीं मिटा सकती। वास्तव में, मृत्यु एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा आत्मा शरीर को छोड़कर उस से अलग हो जाती है। परन्तु कुछ लोगों की धारणा यह है कि वही आत्मा फिर से किसी रुप में जन्म लेकर जगत में आ जाती है, और यही क्रम हज़ारों तथा लाखों वर्षों तक चलता रहता है। अर्थात् एक ही आत्मा बार-बार शरीर से अलग होकर फिर किसी अन्य प्राणी की देह को लेकर जगत में आ जाती है। परन्तु ऐसी शिक्षा हमें परमेश्वर के वचन से नहीं मिलती। बाइबल में लिखा है, कि सब मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उस के बाद न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियों ९:२७)। दूसरे शब्दों में, आप इस संसार में पहिली और अंतिम बार आए हैं। इस जीवन के बाद परमेश्वर के साथ मेल कर लेने का फिर आपको दोबारा अवसर नहीं मिलेगा। इसलिये यह जीवन आपके लियें एक बड़ी ही अनमोल वस्तु है। क्योंकि इस जीवन की समाप्ति पर आप हमेशा के लिये उस अनन्तकाल में चले जाएंगे जहां से कभी कोई मनुष्य वापस नहीं आएगा। और बाइबल हमें बताती है, कि उस अनन्तकाल में केवल दो ही आत्मिक निवास स्थान हैं। अर्थात् एक तो वह स्थान है जहां मनुष्य हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग रहेगा, और दूसरा स्थान वह है जहां मनुष्य हमेशा परमेश्वर के साथ रहेगा। प्रभु यीशु ने इन दोनों ही स्थानों का वर्णन करके एक जगह यूं कहा था, कि सारे अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५:४६)।

मित्रो, क्या आप अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं ? इसके लिये पहिले आप को धर्मी बनना पड़ेगा, क्योंकि केवल धर्मी ही अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। परंन्तु आप अपने प्रयत्नों से धर्मी नहीं बन सकते, आप अपनी ओर से कुछ भी करके धर्मी नहीं बन सकते। आप केवल यीशु मसीह में धर्मी बन सकते हैं। क्योंकि यीशु, परमेश्वर की ओर से ठहराया हुआ, आपके पापों का प्रायश्चित है। इसी कारण प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह लिखकर इस प्रकार कहता है, "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं ; देखो, वे सब नई हो गईं। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, और मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी। अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उस ने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। सो हम मसीह के राजदूत हैं ; मानों परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है : हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो" क्योंकि, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५:१७-२१)।

मित्रो, यह परमेश्वर का कितना महान वरदान है। यह अवसर आज आप के जीवन में कितना महान है। यीशु मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह से धर्मी बनकर आज आप परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते है। और न केवल यही, परन्तु मसीह में धर्मी बनकर पृथ्वी पर इस जीवन के समाप्त हो जाने पर, आप अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। परन्तु क्या आप अपने पूरे दिल से यीशु मसीह में विश्वास करते हैं ? बाइबल में लिखा है, कि यदि आप यीशु में विश्वास करके अपने पापों से मन फिराएंगे और अपने सब पापों की क्षमा के लिये

बपतिस्मा लेंगे, तो परमेश्वर आपका उद्धार करेगा और यीशु मसीह के बलिदान के कारण स्वर्ग में आपको अनन्त जीवन देगा।

क्या इस सम्बन्ध में मैं आप की कोई सहायता कर सकता हूं ? मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी यदि आप मुझे सूचित करेंगे।

*

बाइबल परमेश्वर का वचन है

मित्रो :

इस कार्यक्रम में हम पवित्र बाइबल का अध्ययन करते हैं। बाइबल का अध्ययन हम इसलिये करते हैं क्योंकि हमारा विश्वास है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। अर्थात् इस पुस्तक में लिखी बातों को परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखवाया है। और हमारा यह विश्वास किन्ही मिथ्या विचारों पर नहीं परन्तु कुछ बड़े ही ठोस प्रमाणों पर आधारित है। इसीलिये हम बाइबल में लिखी बातों का प्रचार करते हैं। क्योंकि हम चाहते हैं कि संसार में हरएक इन्सान परमेश्वर की इच्छा को मानकर और उस पर चलकर अपनी खोई हुई आत्मा को बचा ले।

शताब्दियों से मनुष्य जगत में परमेश्वर को खोज रहा है और अपने लिये उसने हज़ारों भांति-भांति के ईश्वर बना लिये हैं। परन्तु बाइबल के द्वारा सच्चे वा जीवते परमेश्वर ने अपने आपको मनुष्य पर प्रगट किया है। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर आत्मा है। (यूहन्ना ४:२४)। वह पवित्र, महान और सर्वशक्तिमान और सब जगह विद्यमान है (भजन १३९ :१-१६)। वह सारी सृष्टि का बनानेवाला और मनुष्य का आत्मिक पिता है। (उत्पत्ति १,२ ; मत्ती ६:९)। बाइबल कहती है कि "जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।

उस ने एक ही भूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं.....सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रुपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों।" (प्रेरितों १७:२४-२९)

मनुष्य अपने बारे में जानना चाहता है : अर्थात मैं कहां से आया हूं ? कुछ समय पूर्व कुछ लोगों ने यह मान लिया था, कि मनुष्य का विकास कीटाणुओं तथा पशुओं से हुआ है, और आज यह धारणा बड़ी ही प्रचलित बन गई है। किन्तु पृथ्वी पर मनुष्य कहां से आया है ? केवल बाइबल ही इस प्रश्न का बिल्कुल सही उत्तर हमें देती है। बाइबल में लिखा है कि आरम्भ में मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया था। उस ने मनुष्य को अपने समान पवित्र और अपने आत्मिक स्वरुप पर बनाया था, अर्थात मनुष्य की शारीरिक देह के भीतर उसने आत्मा को रखा था। किन्तु परमेश्वर ने मनुष्य को एक ऐसा स्वतंत्र प्राणी बनाया था जो अपनी इच्छा से अच्छाई तथा बुराई को परखकर चल सके। परन्तु मनुष्य ने बुराई के मार्ग को चुना था और फलस्वरुप अपने परमेश्वर-समान पवित्र आत्मिक स्वभाव को पाप से गन्दा कर लिया था। इस कारण मनुष्य परमेश्वर की समानता के स्तर से नीचे गिर गया और परमेश्वर की सहभागिता से अलग हो गया। बाइबल कहती है कि पाप करके मनुष्य आत्मिक रुप से मर गया था। (उत्पत्ति १,२)।

परन्तु बाइबल न केवल सच्चे परमेश्वर को तथा मनुष्य की सृष्टि को और परमेश्वर और मनुष्य के सम्बन्ध को ही प्रगट करती है। किन्तु इस पुस्तक में परमेश्वर ने मनुष्य को एक विशेष संदेश दिया है। और वह संदेश यह है, कि यदि मनुष्य चाहे तो वह परमेश्वर की इच्छा को मानकर अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके फिर से उसके साथ अपना मेल कर सकता है। अर्थात् बाइबल के द्वारा परमेश्वर ने जगत में सारे लोगों को यह संदेश दिया है, कि प्रत्येक मनुष्य

के पास परमेश्वर के पास लौट आने का एक और अवसर है। इस से पहिले कि मनुष्य अपनी देह को इस पृथ्वी पर छोड़कर इस जगत से सदा के लिये चला जाए वह अपने पापों की क्षमा प्राप्त करके परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है, उसकी पवित्रता की समानता पर उसके साथ एक हो सकता है, और इसलिये उसके स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है, जहां वह उसके साथ हमेशा तक रहेगा। परन्तु यह कैसे हो सकता है ? बाइबल में परमेश्वर कहता है कि उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर बलिदान करके उसे सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया है। (यूहन्ना ३:१६)। अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु जगत के सारे लोगों के पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था। (रोमियों ५:८)। परन्तु अब शायद आप यह कहें कि परमेश्वर कोई मनुष्य तो है नहीं कि उसका कोई पुत्र हो। किन्तु बाइबल कहती है, कि यीशु इस कारण परमेश्वर का पुत्र है क्योंकि वह किसी मनुष्य की इच्छा से नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से जन्मा था। (यशायाह ७:१४ ; मत्ती १:१८-२५)। परमेश्वर के वचन की इस पुस्तक में लिखा है, कि परमेश्वर ने अपने वचन को मनुष्य बनाकर इस पृथ्वी पर भेजा था। (यूहन्ना १:१, १४)। और उसी ने अपनी इच्छा से यीशु को क्रूस के ऊपर बलिदान किया था ताकि उसकी मृत्यु से सारे जगत के पापों का प्रायश्चित हो जाए (१ यूहन्ना ४:१०)। परन्तु इस महान कार्य को करने के बाद, परमेश्वर ने मनुष्य को यह आज्ञा दी है, कि प्रत्येक मनुष्य यीशु में विश्वास करे कि वह मेरे पापों के बदले में मारा गया था।और अपने पापों से मन फिराए, और पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। (मरकुस १६:१६ ; प्रेरितों २:३८ ; २२ : १६)। परन्तु कोई भी मनुष्य, यदि उसका यह विश्वास न हो कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, इन बातों को नहीं मानेगा। सो इस थोड़े से समय में आपको मैं कुछ ऐसे प्रमाण बताने जा रहा हूं जो इस बात को बिना किसी संदेह के सिद्ध करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का ही वचन है।

मान लीजिए, यदि कोई व्यक्ति अंधकार में एक हज़ार मील की दूरी से किसी वस्तु पर तीर मारना चाहे, और ऐसे ही एक दूसरा व्यक्ति आठ सौ मील की दूरी से उसी वस्तु पर तीर चलाना चाहे, और वे दोनों ही उस वस्तु पर अपने अनुमान से तीर मार कर कामयाब हो जाएं। तो आप इस विषय में क्या कहेंगे ? निश्चय ही कोई मनुष्य ऐसा काम नहीं कर सकता। परन्तु बाइबल के सम्बन्ध में हम ठीक यही बात देखते हैं। मूसा ने यीशु मसीह के जन्म से चौदह सौ साल पहिले और दाऊद ने एक हज़ार साल पहिले और यशायाह ने आठ सौ साल पहिले बाइबल की पुस्तकों में यीशु के जन्म लेने और उसकी मृत्यु और जी उठने के बारे में लिखा था। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि जो कुछ यीशु के बारे में उन्होंने सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखा था वह सब ठीक उसी तरह से पूरा हुआ था।

फिर, हम यह आश्चर्य जनक बात भी बाइबल के सम्बन्ध में देखते हैं कि जिन बातों की खोज हमारे आधूनिक विज्ञान ने अभी कुछ ही समय पहिले की है, बाइबल में हज़ारों वर्ष पहिले उन के बारे में लिखा जा चुका था। विज्ञान के जगत में आज यह माना जाता है कि सृष्टि की सविस्तार रचना से पहिले कुछ तत्व विद्यमान थे। किन्तु बाइबल के पहिले ही पृष्ठ पर हम यह पढ़ते हैं : "और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहिरे जल के ऊपर अन्धियारा था" (उत्पत्ति १:२)। आज विज्ञान कहता है कि सूर्य की उत्पत्ति से पहिले पृथ्वी पर प्रकाश विद्यमान था। किन्तु परमेश्वर से प्रेरणा पाकर मूसा ने बाइबल के पहिले ही पृष्ठ पर यूं लिखा था, "तब परमेश्वर ने कहा उजियाला हो : तो उजियाला हो गया।" (उत्पत्ति १:३)। अर्थात आरम्भ में परमेश्वर ने, सूर्य और चंद्रमा के चमकने से पहिले, उजियाले को बनाया था और फिर चौथे दिन परमेश्वर ने सूरज और चांद और सितारों को बनाया था। (उत्पत्ति १:१४-१९)। इसी प्रकार की अनेक अन्य बहुत सी अश्चर्यपूर्ण बातों को भी हम बाइबल

में पढ़ते हैं जो यह दिखाती हैं कि इन बातों का बाइबल में लिखा जाना किसी मनुष्य के ज्ञान या सामर्थ की बात नहीं थी।

एक और ख़ास बात बाइबल के बारे में हम यह देखते हैं, कि यह पुस्तक स्वयं परमेश्वर के वचन की पुस्तक होने का दावा करती है। सैंकड़ों जगह इस पुस्तक में यूं लिखा हुआ है कि "परमेश्वर यूं कहता है" या "परमेश्वर का यह वचन है" यदि बाइबल को मनुष्यों ने अपने ही ज्ञान से लिखा होता तो वे ऐसा क्यों लिखते ? यदि बाइबल को अच्छे और नेक लोगों ने लिखा है, तो हम जानते हैं कि वे लोग झूठ नहीं बोल सकते। और यह भी सच है कि दुष्ट और बुरे लोगों के लिये बाइबल जैसी महान पुस्तक को लिखना असम्भव था क्योंकि बाइबल धार्मिकता तथा पवित्रता को ऊंचा उठाती है और बुराई तथा दुष्टता का विरोध करती है और कहती है कि ऐसे लोग नरक के अन्धकार में अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे।

फिर हमारा ध्यान बाइबल की शिक्षाओं के ऊपर जाता है। यह पुस्तक हमें सिखाती है कि सबसे अधिक प्रेम हमें अपने परमेश्वर के साथ रखना चाहिए, हमें उस से डरना चाहिए और उसकी आज्ञाओं को मानना चाहिए और अपने जीवनों से उसकी महिमा और बड़ाई करनी चाहिए। इसी तरह परमेश्वर की पुस्तक हमें शिक्षा देकर कहती है कि हमें दूसरे लोगों को अपने समान प्रेम करना चाहिए, और जो कुछ हम चाहते हैं कि लोग हमारे साथ करें वैसे ही हमें भी उनके साथ करना चाहिए।

आपको कभी भी कोई ऐसा मनुष्य नहीं मिल सकता जो बाइबल को प्रतिदिन पढ़ता हो और उसकी शिक्षानुसार चलता हो किन्तु वह एक बुरा मनुष्य हो। वास्तव में भलाई तथा अच्छाई के जितने भी काम पृथ्वी पर लोग करते हैं वे सब किसी न किसी प्रकार से बाइबल से जुड़े हुए हैं। बाइबल की शिक्षाओं से प्रभावित होकर लोग प्रेम और सेवा के काम करते हैं। बहुतेरे अपने

देश और घर को छोड़ देते हैं और बीहड़ और जंगली स्थानों में जाकर लोगों के बीच में रहते हैं। वे अपाहिजों और पीड़ितों की सेवा करना चाहते है। वे दुखों और कठिनाईयों का सामना करके संसार में सब स्थानों पर जाकर लोगों को बाइबल का यह सुसमाचार देना चाहते हैं कि परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौते पुत्र को सारे जगत के पापों के लिये बलिदान कर दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह अपने पाप के कारण नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। इस सुसमाचार के प्रचार के लिये वे लोग अपना धन देना चाहते हैं, अपना समय देना चाहते हैं, और जो कुछ उन के पास है उस सब को देना चाहते हैं। इन बातों को ध्यान में रखकर हमारे सामने एक बड़ा ही गम्भीर प्रश्न आ जाता है, अर्थात् यह, कि यदि बाइबल परमेश्वर का वचन नहीं है तो मनुष्यों के जीवनों पर इसमें लिखी बातों का इतना बड़ा प्रभाव क्यों है ?

परन्तु बाइबल के सम्बन्ध में इसी प्रकार के कुछ अन्य प्रश्न भी बड़े ही विचारपूर्ण हैं। जैसे कि यह पुस्तक कभी पुरानी क्यों नहीं होती ? क्यों संसार में सबसे अधिक लोग इसी पुस्तक को पढ़ते हैं ? क्यों यह पुस्तक संसार में प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में छपती है और करोड़ों की संख्या में इस पुस्तक के सम्बन्ध में लेख छपते हैं ? यद्यपि शताब्दियों से अनेक राजाओं और आलोचकों ने इस पुस्तक के अस्तित्व को समाप्त करने का प्रत्येक प्रयत्न किया है, परन्तु तौभी बाइबल और बाइबल में विश्वास करनेवाले लोगों की गिनती लाखों से करोड़ों में हो गई है ? शताब्दियों से हमारी इस पृथ्वी पर बड़े-बड़े बुद्धिमान और विद्वान लोग हुए हैं, परन्तु क्यों नहीं उन में से कोई भी एक ऐसी पुस्तक लिख पाया जो बाइबल के तुल्य या बाइबल से बढ़कर हो ?

मित्रो, यदि इन सब बातों को सुनने के बाद भी आप यह विश्वास नही करते कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, तो स्वर्ग से कोई दूत भी पृथ्वी पर आकर आपको यह विश्वास नहीं दिला सकता। परन्तु आप में से जो लोग

बाइबल को परमेश्वर का वचन मानते हैं, मैं आपसे यह कहना चाहूंगा कि आप परमेश्वर की इस पुस्तक को हर एक दिन पढ़िये और इस में लिखी बातों पर चलिये। क्योंकि परमेश्वर ने अपने वचन की इस पुस्तक को हमें इस जीवन में दिया है और आनेवाले जीवन में न्याय के दिन वह इसी पुस्तक में लिखी हुई बातों के द्वारा सारे जगत का न्याय करेगा। (यूहन्ना १२:४८; १ पतरस १:२४,२५,१ यूहन्ना २:१७)।

अब, "सब कुछ सुना गया ; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर ; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।" (सभोपदेशक १२:१३,१४)।

बाइबल की मुख्य शिक्षाएं

लेखक

सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो सन्देशमाला

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया
बॉक्स 3815
नई दिल्ली - 110049

Important Teachings Of Bible

मुद्रक : प्रिंट इन्डिया, A-38/2 द्वितीय चरण, मायापुरी,
नई दिल्ली - ११००६४

विषय सूची

1. केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है 6
2. वस्तुएं जो केवल एक-एक हैं 12
3. उद्धार केवल मसीह में है 18
4. उद्धार परमेश्वर का एक दान है 23
5. उद्धार पाने के लिये सुसमाचार का पालन करना आवश्यक है 29
6. सब का उद्धार नहीं होगा 35
7. स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है 40
8. स्वर्ग एक वास्तविक स्थान है 45
9. नरक उतना ही वास्तविक है जितना कि स्वर्ग है 50
10. मृत्यु के बाद न्याय निश्चित है 56
11. दोबारा अवसर नहीं मिलेगा 62
12. बाइबल परमेश्वर का वचन है 68

सूचना

आप रेडियो पर प्रभु यीशु का सुसमाचार सुन सकते हैं। हर एक मंगलवार, बृहस्पतिवार, और शुक्रवार को रात में 9 बजे और हर एक रविवार को दिन में 12:45 पर ये कार्यक्रम रेडियो श्री लंका से 25, 41, और 31 मीटर बैंड पर सुने जा सकते हैं।

एक और आवश्यक सूचना !

आप हमारे यहां से कुल पन्द्रह रुपए भेजकर सुसमाचार प्रवचनों की बीस पुस्तकें मंगवा सकते हैं; इनके द्वारा प्रचार किया जा सकता है और इन्हें लोगों को पढ़ने के लिये भी दिया जा सकता है। इन किताबों को अन्य लोगों तक पहुंचाकर आप मसीह के सुसमाचार को उन तक पहुंचा सकते हैं।

पता :

बाइबल टीचर

बॉक्स 3815

नई दिल्ली -110049

परिचय

बाइबल हमें कुछ महान तथा विशेष विषयों के बारे में बताती है। जैसे कि परमेश्वर और उसका अनुग्रह, उद्धार, यीशु का सुसमाचार नया-जन्म, स्वर्ग और नरक मृत्यु तथा उसके पश्चात् न्याय।

कई बार वे लोग भी जो यीशु में विश्वास करते हैं यह जानकर बड़े ही चकित होते हैं कि जिस बात में वे विश्वास करते हैं वह बात बाइबल में कहीं भी नहीं सिखाई गई है। आप शायद सोचें कि यह कैसे हुआ ? यह केवल इसीलिये हुआ क्योंकि ये लोग शुरु से ही उन शिक्षाओं में बड़े हुए और उन्होंने कभी भी स्वयं बाइबल का अध्ययन करने की कोशिश नहीं की। दुख की बात यह है कि सच्चाई को जानने के बाद भी ये लोग अपनी गलती में ही रहना उचित समझते हैं।

प्रस्तुत पाठ इसीलिये लिखे गए हैं ताकि हम जानें कि बाइबल इन बड़े विषयों के बारे में क्या शिक्षा देती है। इसमें कोई शक नहीं कि सच्चाई एक दवाई की तरह काम करती है उनके लिये जिनको इसकी आवश्यकता होती है, यदि वे इसका उपयोग करें।

हमारी यह प्रार्थना है कि आप सच्चाई को जानकर उसको स्वीकार करेंगे।

इन पाठों को भाई सनी डेविड ने तैयार किया है ताकि इन्हें रेडियो के माध्यम से सारे भारतवर्ष में सुना जा सके। अब इन पाठों को एक पुस्तक का रूप दिया गया है ताकि कि आप इन्हें मंगवाकर अपने ही घर में बाइबल का अध्ययन कर सकें। हमारी आशा है कि आप को इस पुस्तक से अवश्य ही लाभ होगा।

जे० सी० चोट

केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है

जिस प्रकार शारीरिक रुप से ज़िन्दा रहन के लिये हमें भोजन की आवश्यकता है, ठीक वैसे ही आत्मिक रुप से ज़िन्दा रहने के लिये भी हमें परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है। प्रभु यीशु ने एक बार परमेश्वर के वचन की तुलना भोजन के साथ करके यूं कहा था, "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" (मत्ती ४:४)। यहां प्रभु यीशु के कहने का अर्थ वास्तव में यह है कि शारीरिक रुप से ज़िन्दा रहने के लिये मनुष्य को रोटी की आवश्यकता है, लेकिन तौभी रोटी उसे हमेशा तक ज़िन्दा नहीं रख सकती है। परन्तु परमेश्वर का वचन ऐसा भोजन है जिसके द्वारा मनुष्य हमेशा तक ज़िन्दा रहेगा। इस बात को ध्यान में रखकर आज हमारे जीवनों में परमेश्वर के वचन का एक बड़ा विशाल महत्व होना चाहिए; हमें उसके वचन को सुनने के लिये उन्मादित रहना चाहिए और उसे मानने के लिये सदा तैयार रहना चाहिए। परमेश्वर के वचन के लिये यीशु ने जो कहा था वास्तव में वह सच है। क्योंकि परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि जगत में सब लोग पाप के वश में हैं, और इसलिये वे सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, उस से अलग हैं और इस कारण आत्मिक दृष्टिकोण से वे सब मरे हुए हैं। (रोमियों ३:२३; यशायाह ५९:१,२)। स्वयं मनुष्य भी इस बात को जानता है, और इस कारण वह अपनी कल्पना से परमेश्वर की भक्ति और उपासना करके उसे प्रसन्न करना चाहता है। शताब्दियों से मनुष्य ने अपनी कल्पना से अनेक ईश्वरों और भगवानों को अपने लिये रच लिया है। मनुष्य ने अपनी कल्पना के उन भगवानों को अनेक मूर्तियों का रुप भी दिया है, और उन मूर्तियों को वह पूजता है; उन्हें फूलों की मालाएं पहिनाता है ; उनके आगे फलो

और मेवों इत्यादि की भेंट चढ़ाता है। वह उनके सामने झुककर उन्हें दन्डवत करता है, और उनकी प्रशंसा में गा-बजाकर उनकी स्तुति और बड़ाई करता है। और यह सब कुछ मनुष्य इसलिये करता है ताकि परमेश्वर उस से प्रसन्न हो जाए और उसके पापों को क्षमा कर दे। ताकि उसका मेल परमेश्वर के साथ हो जाए और वह नरक में जाने से बच जाए।

परन्तु सच्चा तथा जीवता परमेश्वर अपने पवित्र वचन की पुस्तक बाइबल में आज्ञा देकर कहता है, कि "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दन्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना।" (निर्गमन 20:३-५)। और जो लोग ऐसा करते हैं उन से परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक में यूं कहता है, कि "जो मूरत खोदकर बनाते हैं, वे सब के सब व्यर्थ हैं, और जिन वस्तुओं में वे आनन्द ढूंढ़ते हैं उन से कुछ लाभ न होगा; उनके साक्षी, न तो आप कुछ देखते, और न कुछ जानते हैं, इसलिये उनको लज्जित होना पड़ेगा।" (यशायाह ४४:९) । एक अन्य स्थान पर परमेश्वर की पुस्तक का लेखक लिखकर यूं कहता है, "हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उसने जो चाहा वही किया है। उन लोगों की मूर्तें सोने चांदी ही की तो हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं। उनके मुंह तो रहता है, परन्तु वे बोल नहीं सकतीं; उनके आँखे तो रहती हैं, परन्तु वे देख नहीं सकती। उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकतीं; उन के नाक तो रहती है, परन्तु वे सूंघ नहीं सकती उनके हाथ तो रहते है, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकतीं; उन के पांव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकती; और अपने कन्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं। जैसी वे हैं वैसे ही उन के बनानेवाले हैं; और उन पर सब भरोसा रखने वाले भी वैसे ही हो जाएँगे।" (भजन संहिता ११५:३-८)। और फिर बाइबल में हमें यह एक बड़ी ही गम्भीर चेतावनी मिलती है। लिखा है:

"परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रगट है, क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उन के मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की न कि उस सृजन हार की जो सदा धन्य है।" (रोमियों १:१८-२५)।

मित्रो, आज मैं आपके सामने यह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न रख रहा हूं, कि आज आप किस ईश्वर या परमेश्वर को मान रहे हैं? क्या आप का परमेश्वर कोई निर्जीव वस्तु है, या क्या आप उस परमेश्वर कि इच्छा पर चल रहे हैं जो सच्चा और ज़िन्दा है; जो स्वर्ग और पृथ्वी का और जो कुछ भी उन में है उन सबका बनानेवाला है? क्या आप का परमेश्वर किसी मनुष्य की कल्पना का परमेश्वर है, या क्या आप उस महान परमेश्वर से परिचित हैं जो आज भी अपने लिखे हुए वचन के द्वारा प्रत्येक मनुष्य के साथ बातें करता है? सुनिये, कि प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में लिखकर क्या कहता है ; वह कहता है, कि, "हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर

कहलाते हैं, (जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)। तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिये हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएं हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं।" (१ कुरिन्थियों ८: ४-६) क्या आप ने सुना ? परमेश्वर की प्रेरणा से लिखनेवाला कहता है कि हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है। मित्रो, आप चाहे किसी भी भाषा के बोलनेवाले हों ; चाहे किसी भी जाति या कुल के हों, परन्तु जो परमेश्वर आप का है वही मेरा भी परमेश्वर है– और हम सब का केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है। वह कोई मरा हुआ निर्जीव परमेश्वर नहीं है, परन्तु वह एक ज़िन्दा और कार्यशील परमेश्वर है। वह केवल एक शक्ति ही नहीं है परन्तु वह हम सब का एक प्रेमी पिता है। वह परमेश्वर आज अपने वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल के द्वारा हम से बातें करता है। न केवल वह अपने वचन की पुस्तक में हमें यही बताता है कि हम सब पाप के कारण उससे अलग है और अपने पापों के कारण हमेशा के लिये नाश हो जाएंगे। परन्तु अपनी पुस्तक में उसने हमें एक छुटकारे का मार्ग भी दिखाया है। वह हम से प्रेम करता है और पाप से हम सब का उद्धार करना चाहता है। वह चाहता है कि हम सब पाप से मुक्ति प्राप्त करके धर्मी बन जाएं और इस जीवन के बाद उसके स्वर्ग में प्रवेश करके हमेशा तक उसके साथ रहें। सो वह हम सब से कहता है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के ऊपर विश्वास लाएं। क्योंकि परमेश्वर ने हम सब के पापों के छुटकारे के दाम में उसे मरने के लिये दे दिया था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर के अनुग्रह से यीशु ने जगत में प्रत्येक मनुष्य के पाप के कारण मृत्यु का स्वाद चखा था। (इब्रानियों २:८)। वह परमेश्वर की इच्छा से मनुष्यों के हाथों से मरने के लिये क्रूस पर चढ़ाया गया, क्योंकि उसे परमेश्वर ने जगत के सारे लोगों के पापों का प्रायश्चित ठहराया, अर्थात् यीशु प्रत्येक मनुष्य के बदले में, उसके पापों के कारण परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर मारा गया था। (रोमियों ५:८;१ यूहना 2:2)। इसलिये बाइबल

हम से कहती है "कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो।" क्योंकि, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बना जाएं।" (2 कुरिन्थियों ५:२०, २१)। यीशु परमेश्वर का सामर्थी वचन था। वह पृथ्वी पर मनुष्य की देह लेकर केवल इसीलिये आया था कि उसके बलिदान के कारण मनुष्य को अपने पापों से उद्धार पाने का मार्ग मिल जाए। उसकी मृत्यु के तीन दिन के बाद परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से उसे फिर जिला उठाया, और इसके बाद वह स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया। क्या आप यीशु पर विश्वास करते हैं? क्या आप अपने सारे मन से इस बात पर विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मेरे पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था ? यदि आप ऐसा करते हैं, तो बाइबल का परमेश्वर आप को यह आज्ञा देता है कि आप अपना मन फिराएं अर्थात् पाप और अज्ञानता की उन सब बातों को छोड़ दें जिनसे सच्चे परमेश्वर की बड़ाई नहीं होती। और फिर हमारे परमेश्वर की यह आज्ञा है कि जो लोग ऐसा करते हैं वे उसके नाम से बपतिस्मा लें अर्थात् पानी के भीतर दफ़न होकर अपने पुराने मनुष्यत्व को गाड़ दें।
(मत्ती २८:१९; मरकुस १६:१६; लूका १३:३; रोमियों ६:३-६; १ पतरस ३:२१)।

यदि आप इस प्रकार परमेश्वर की आज्ञा को मानेंगे, तो बाइबल में लिखा है कि आप एक नए मनुष्य बन जाएंगे (२ कुरिन्थियों ५:१७), क्योंकि परमेश्वर अपने पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के कारण आप के सब पापों को क्षमा कर देगा, और यीशु नें होकर आप परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएंगे (गलतियों ३:२७; २ कुरिन्थियों ५:२२)। फिर इस नए जीवन में आप न तो अपने मन की अनर्थ रीति पर चलेंगे और न अपने मन की कल्पना से परमेश्वर को मानेंगे। परन्तु आप परमेश्वर के वचन के प्रकाश में चलेंगे।

क्या आप उस एकमात्र सच्चे परमेश्वर के ऊपर विश्वास करते हैं जो बाइबल के द्वारा आज हम सब से बातें करता है? क्या आप उसके पुत्र यीशु में विश्वास करते हैं जो हम सब के पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया था ? क्या आप उसके पथ पर चलने को तैयार हैं ? केवल वही एक सच्चा परमेश्वर है, और केवल वही हम सब का उद्धार कर सकता है; और केवल उसी के न्यायासन के सामने एक दिन हम सब को खड़ा होना पड़ेगा। यदि आज आप उसमें विश्वास नहीं करते तो उस दिन उसमें आप अवश्य विश्वास करेंगे। (२ कुरिन्थियों ५:१०) परन्तु धन्य हैं वे जो उस महान दिन के आने से पहिले उसे पहिचान लेते हैं और उसके पुत्र यीशु के द्वारा उसके साथ अपना मेल कर लेते हैं।

वस्तुएं जो केवल एक-एक हैं

आज मैं आपको कुछ ऐसी वस्तुओं के बारे में बताने जा रहा हूं जिनके सम्बन्ध में बाइबल में लिखा है कि वे सब केवल एक ही एक हैं। अकसर आपने कुछ ऐसे विज्ञापन पढ़े होंगे जिनका शीर्षक होता है, "नक्कालों से सावधान !" इस प्रकार के विज्ञापन हमें चेतावनी देने के लिये छापे जाते हैं ताकि हम असली चीज़ के स्थान पर उसी प्रकार की किसी नकली चीज़ को खरीद कर न ले आएं, और साथ ही ऐसे विज्ञापनों में यह भी लिखा रहता है कि असली चीज़ की पहचान क्या है। ठीक ऐसे ही हमें बाइबल में मिलता है। बाइबल हमें बताती है कि कुछ वस्तुएं ऐसी हैं जो केवल एक-एक ही हैं और फिर बाइबल में उन वस्तुओं की कुछ विशेषताओं का वर्णन भी किया गया है ताकि हमें उन्हें पहचानने में कोई गलती न हो और हम उनके स्थान पर किसी और वस्तु को न अपना लें। आज जिस संसार में हम रहते हैं उसमें अनेक वस्तुओं का नकली रुप बनाया जा रहा है। और यह बात न केवल मसालों और मशीनों तक ही सीमित है, परन्तु नकली भगवान और ईश्वर और स्वर्ग में जाने के नकली मार्गों की भी कोई कमी नहीं है। परन्तु परमेश्वर की बाइबल हमें सावधान करके कहती है कि स्वर्ग और पृथ्वी का केवल एक ही परमेश्वर है और उसने सब मनुष्यों की मुक्ति के लिये केवल एक ही मार्ग को प्रगट किया है (१ कुरिन्थियों ८:६; यूहना १४:६) बाइबल कहती है कि जगत में सब मनुष्यों के उद्धार का केवल यही एक सुसमाचार है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र हमारे पापों के लिये मर गया और गाड़ा गया और तीसरे दिन फिर जी उठा। (१ कुरिन्थियों १५:३,४)। जब प्रेरित पौलुस ने बाइबल में कुरिन्थियों के नाम अपनी पत्री को लिखा था तो उसने उन से कहा था कि मैं तुम्हें फिर से वही सुसमाचार सुनाता हूँ जो पहिले